ज्ञानामृत दिसम्बर, 1983 वर्ष 19 ❋ अंक 6 मूल्य 2.50

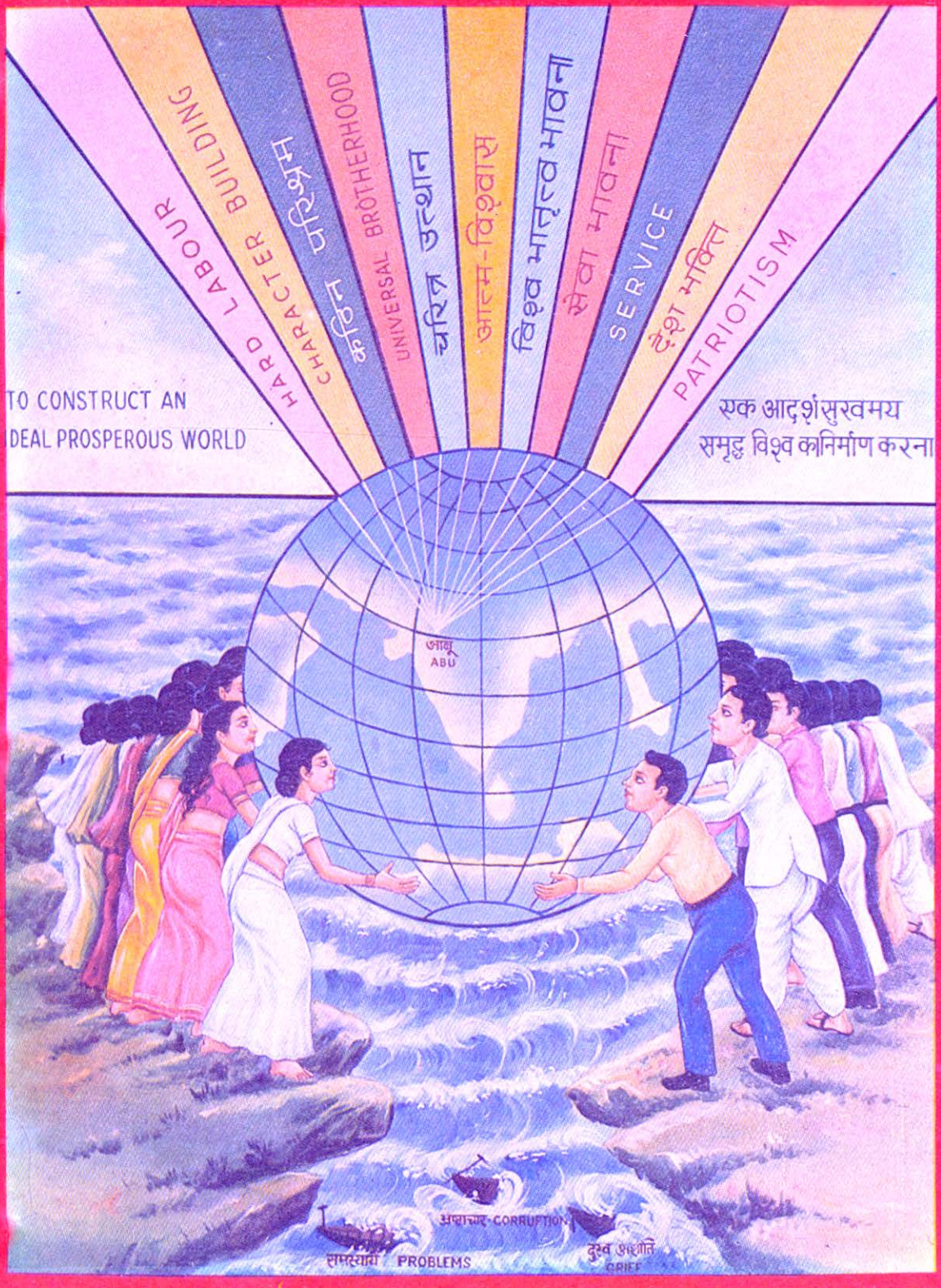

आज का विश्व दल, अशान्ति भ्रष्टाचार और समस्याओं रूपी सागर में डूबता जा रहा है और युवक शक्ति इस विश्व को ऐसे सागर से निकाल सकती है। विश्व में भारत और भारत में आबू से निराकार परमपिता परमात्मा शिव द्वारा युवकों को ज्ञान प्रकाश की किरणें मिल रही हैं। उन्हें लक्ष्य दिया जा रहा है कि वे अपने कठिन परिश्रम, चरित्र उत्थान, देश-भक्ति तथा विश्व-बन्धुत्व और सेवा भावना के द्वारा एक आदर्श सुखमय समृद्ध विश्व का निर्माण करें।

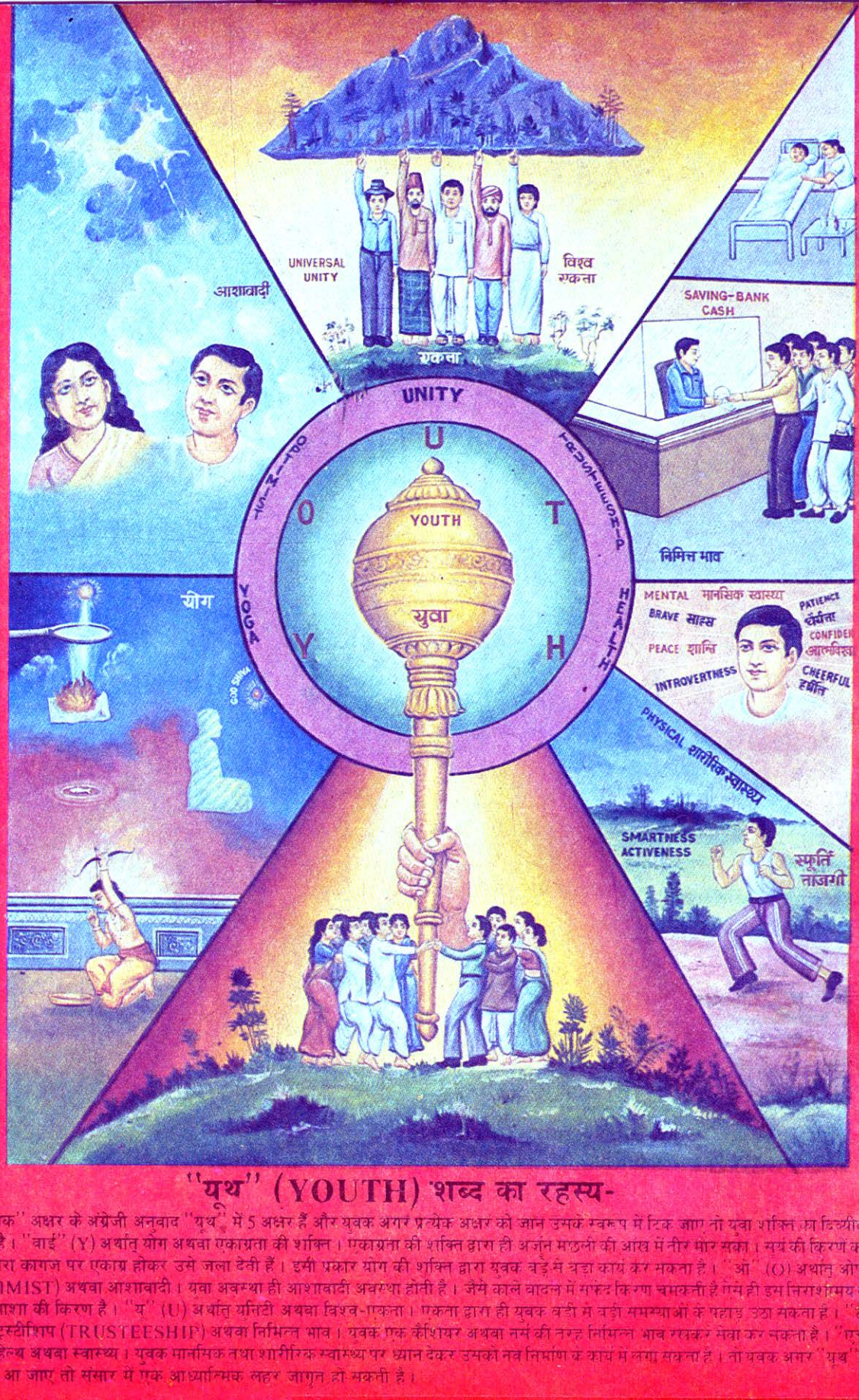

"यूथ" (YOUTH) शब्द का रहस्य-

"युवक" अक्षर के अंग्रेजी अनुवाद "यूथ" में 5 अक्षर हैं और युवक अगर प्रत्येक अक्षर को जान उसके स्वरूप में टिक जाए तो युवा शक्ति का दिव्यीकरण हो सकता है। "वाई" (Y) अर्थात् योग अथवा एकाग्रता की शक्ति। एकाग्रता की शक्ति द्वारा ही अर्जुन मछली की आख में तीर मार सका। सूर्य की किरणें कानवेक्स लेन्स द्वारा कागज पर एकाग्र होकर उसे जला देती हैं। इसी प्रकार योग की शक्ति द्वारा युवक बड़े से बड़ा कार्य कर सकता है। "ओ" (O) अर्थात् ऑप्टीमिस्ट (OPTIMIST) अथवा आशावादी। युवा अवस्था ही आशावादी अवस्था होती है। जैसे काले बादल में सफेद किरण चमकती है वैसे ही इस निराशामय संसार में युवक आशा की किरण है। "य" (U) अर्थात् यूनिटी अथवा विश्व-एकता। एकता द्वारा ही युवक बड़ी से बड़ी समस्याओं के पहाड़ उठा सकता है। "टी" (T) अर्थात् ट्रस्टीशिप (TRUSTEESHIP) अथवा निमित्त भाव। युवक एक कैशियर अथवा नर्स की तरह निमित्त भाव रखकर सेवा कर सकता है। "एच" (H) अर्थात् हेल्थ अथवा स्वास्थ्य। युवक मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देकर उसको नव निर्माण के कार्य में लगा सकता है। तो युवक अगर "यूथ" शब्द के भाव में आ जाए तो संसार में एक आध्यात्मिक लहर जागृत हो सकती है।

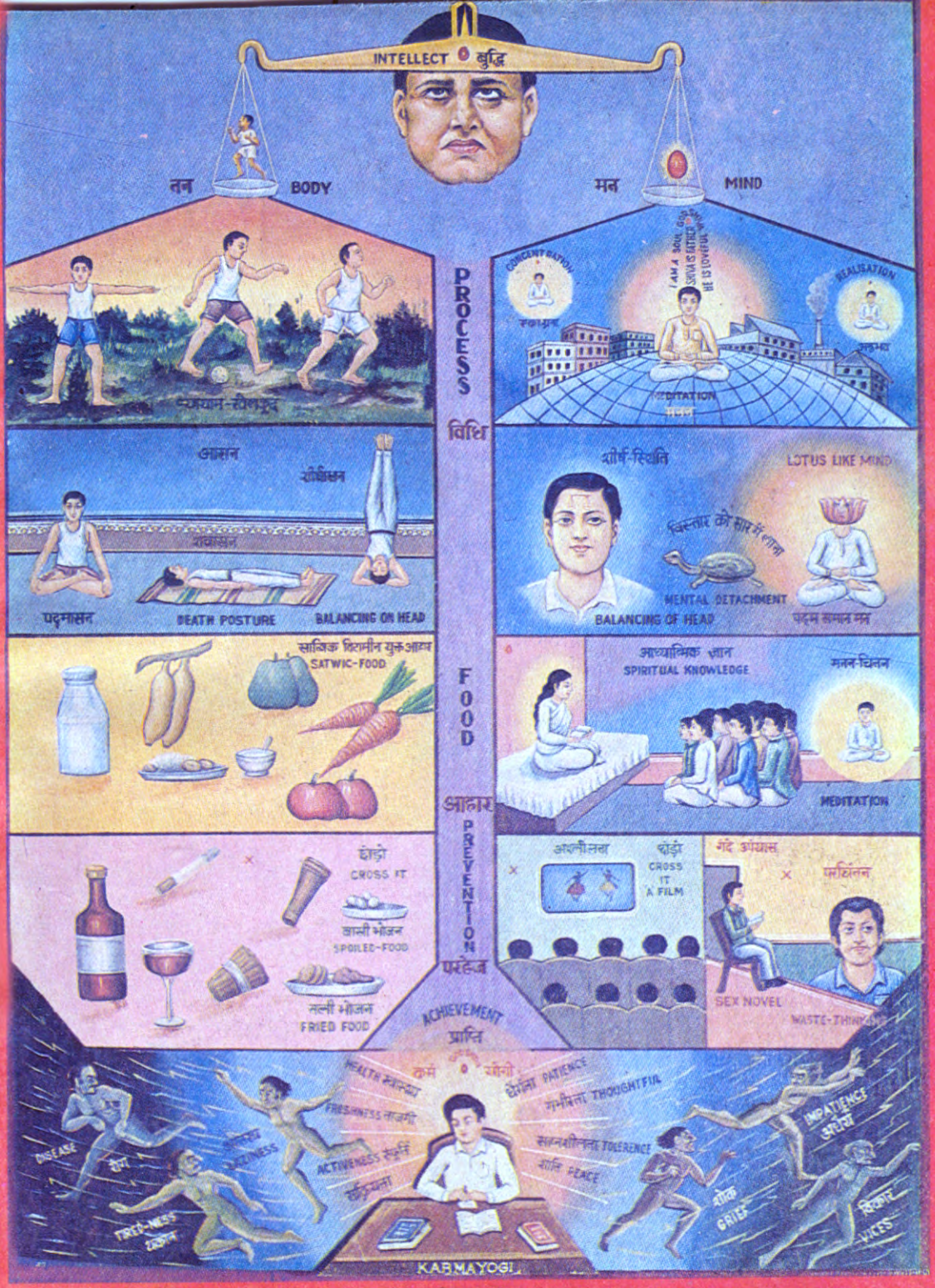

युवा और योग

तन और मन दोनों के स्वास्थ्य का सन्तुलन होना परम आवश्यक है। यदि शरीर के स्वास्थ्य के लिए खेल कूद और आसन जरूरी है तो मन के स्वास्थ्य के लिए परमात्मा पर एकाग्रता तथा हर परिस्थिति में मानसिक सन्तुलन और कमल फल जैसी स्थिति आवश्यक है। जैसे शरीर के स्वास्थ्य के लिए सात्विक और पौष्टिक भोजन चाहिए वैसे आत्मा के लिए आध्यात्मिक ज्ञान एवं मनन चिन्तन रूपी भोजन चाहिए। जिस प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए बासी भोजन, तला हुआ भोजन और मादक वस्तुओं का सेवन निषेध माना जाता है इसी प्रकार आत्मिक स्वास्थ्य के लिए परचिन्तन, अश्लील पुस्तकें एवं चित्रों का निषेध है। इन सब बातों को जीवन में अपनाने के लिए परमात्मा के साथ योग होना आवश्यक है। जिसके फल स्वरूप शरीर भी स्वस्थ, होगा और आत्मा भी सहनशीलता, धैर्यता, गम्भीरता आदि सर्व गुणों से भरपूर होती जायेगी और जीवन से रोग, शोक, तनाव, थकावट, दुख अशान्ति आदि सब विकार समाप्त होंगे। अतः युवक को चाहिए कि शरीर के साथ-साथ वह आत्मा के स्वास्थ्य पर भी पूरा ध्यान दे।

Regd. No. 10563/65—D(E)—70

देह अभिमानी युवक उस शुष्क पेड़ की तरह है जिसकी चरित्र रूपी जड़ 5 विकारों के कारण कमजोर हो गई है और गुण रूपी दैवी गुण फल और फूल झड़ गये हैं। आज का युवक अच्छा खाना, अच्छा पहनना, अच्छा रहना तो चाहता है लेकिन उसकी मूल, आत्मा पर उसका ध्यान नहीं है। वह जड़ के स्थान पर पेड़ को पानी दे रहा है। इसलिए वह पेड़ सूखा ही रह जाता है। इसके विपरीत आत्म अभिमानी युवक उस हरे भरे पेड़ की तरह है जिसकी चरित्र रूपी जड़ो मे आध्यात्मिकता का जल पड़ने के कारण वह सुख-शान्ति, दया सेवा, भाई चारा और आनंद के पल से लदा हुआ सुन्दर पेड़ बन जाता है। युवक को ज्ञान मिलता है कि वह एक अजर अमर अविनाशी आत्मा है, जिसका वास्तविक स्वधर्म शान्ति है। आत्मा का पिता, निराकार ज्योति स्वरूप परमपिता परमात्मा शिव हैं जो सर्व गुणों के सागर हैं इसलिए उन गुणों की अधिकारी वह इस साकारी सृष्टि में पार्ट बजाने आई है फिर वापस उस परमधाम जाना है। युवकों के प्रति परमात्मा का शुभ सन्देश है, "कि कल, काल का नाम है। जीवन का कोई भरोसा नहीं है। अब, जबकि विश्व अधर्म और विनाश के अंगारों पर जल रहा है, तो जागो, उठो और अपनी शक्ति को पहचानो और विश्व का कल्याण करो। अब नहीं तो कभी नहीं"।

अमृत-सूची

क्र०सं०	विषय	पृष्ठ	क्र०सं०	विषय	पृष्ठ
१.	यूथ शब्द का अर्थ ...	२	१३.	युवा परिवर्तन से विश्व परिवर्तन ...	२१
२.	योगी और कर्मफल ...	३	१४.	युवा-शक्ति एक दिव्य-शक्ति ...	२२
३.	बदलते समाज में युवा वर्ग को चुनौती (सम्पादकीय) ...	४	१५.	युवा और सर्व सम्बन्ध ...	२३
४.	बड़ा दिन (कविता) ...	६	१६.	युवा और सच्चा पथ-प्रदर्शक ...	२४
५.	धर्म हिंसा नहीं सिखाता ..	८	१७.	युवा के विभिन्न वर्गों के प्रति ईश्वरीय सन्देश ...	२५
६.	युवा विश्व के स्तम्भ ...	११	१८.	आध्यात्मिक सेवा-समाचार ...	२६
७.	युवा विश्व की आशा ...	१२	१९.	क्या मनुष्य को अपने भोजन के लिये हिंसा का अधिकार है? ...	२७
८.	युवा विभिन्न वर्गों की दृष्टि में ...	१३	२०.	आध्यात्मिक सेवा-समाचार ...	३०
९.	युवा काल ...	१४	२१.	गीत ...	३४
१०.	युवा, कल, आज और कल ...	१५	२२.	युवा और योग ...	३५
११.	युवा और संकल्प ...	१६	२३.	युवा और आध्यात्मिकता ...	३६
१२.	सचित्र समाचार ...	१७			

योगी और कर्मफल

(जानकी दादी की क्लास से संकलित)

मनुष्य के हरेक कर्म का कोई न कोई परिणाम निकलता ही है। कर्म करने पर उसे या तो सफलता मिलती है या असफलता का सामना करना पड़ता है। परन्तु ज्ञानवान और योगाभ्यासी मनुष्य कर्मातीत अवस्था के जितना निकट पहुंचता है उतना-उतना कर्म के परिणाम से कम प्रभावित होता है। सफलता, असफलता दोनों में एक समान रहता है। कार्य में असफलता होने पर, विघ्न आने पर वह निराश, उदास, नहीं होता। असफलता सामने आने पर वह अपने योग बल को बढ़ाने, अपनी अवस्था को उच्च बनाने तथा अव्यक्त और शक्तिशाली बनाने तथा यत्न में और अधिक तीव्रता लाने का पुरुषार्थ करता है। उसके चेहरे पर असन्तुष्टता के चिन्ह नहीं आते, मन में हिम्मत-हीन होने का भाव पैदा नहीं होता तथा वचन में हताश होने, अपने भाग्य पर नाराज होने या दूसरों के असहयोग के कारण उनसे रुष्ट होने के भाव प्रकट नहीं होते। अपने कर्म का जो परिणाम सामने आता है, वह उसे सृष्टि रुपी ड्रामा अथवा चल-चरित्र का एक दृश्य मान कर साक्षी हो कर उसे देखता रहता है। यह सृष्टि एक अनादि बना बनाया ड्रामा है, हर एक मनुष्य अपना अपना पार्ट बजा रहा है। जो हो रहा है वह किन्हीं अटल नियमों के अनुसार ठीक हो रहा है। वह ज्ञान के पट्टे अथवा ड्रामा के पट्टे पर ठीक ही चलता रहता है। अथवा सफलता, असफलता के सामने वह इस ज्ञान को ढाल के रूप में अपनाता है और वह इस प्रकार अप्रभावित तथा न्यारा रहता है। सफलता हो तो वह बहुत ज्यादा उछलता और इठलाता नहीं, बल्कि उससे निष्कर्ष लेता है कि पुरुषार्थ ठीक था। असफलता हो तो घबराता, सकुचाता, और सटपटाता नहीं, बल्कि "होनी" और "भावी" को अटल मान कर अपने पुरुषार्थ को ठीक करने पर ध्यान देता है। इस प्रकार वह हर कर्म के परिणाम से अतीत रहता है। हर हालत में खुश तथा पुरुषार्थ में सदैव तत्पर रहता है।

□□

बदलते समाज में युवा वर्ग को चुनौती

संयुक्त राष्ट्र संघ को कुछ सुझाव

संयुक्त राष्ट्र संघ १९८५ का वर्ष युवा वर्ष के रूप में मना रहा है। यह बहुत सराहनीय है क्योंकि इससे युवा वर्ग जो कि मानव मात्र की उन्नति और सामाजिक परिवर्तन के लिए शक्ति का सबसे बड़ा स्रोत है, उस पर ध्यान अकर्षित होगा। युवकों में कार्य-शक्ति, उल्लास उमंग बहुत होता है जिससे वे नई-२ परिस्थितियों व कठिन से कठिन समस्याओं का बहादुरी से सामना कर सकते हैं। आज के समाज में जो कि बेमिसाल समस्याओं से जकड़ा हुआ है, यह युवाकाल बहुत महत्व रखता है। युवकों में और भी बहुत गुण हैं जो कि उसे सामाजिक परिवर्तन में बहुमूल्य साधन बनाते हैं।

युवा काल की आयु-सीमा बढ़ाने का सुझाव

इस सम्बन्ध में हम यह बताना चाहते हैं कि युवा और बीच की आयु के मनुष्यों में कोई पक्की रेखा नहीं खींची जा सकती है। इन दोनों को अलग करने के लिए विशेष कोई आयु की सीमा नहीं रख सकते हैं। अतः हमारा सुझाव है १६ वर्ष से २५ वर्ष की आयु तक ही युवा वर्ग को सीमित न रखकर इसे १६ वर्ष से ४० वर्ष तक बढ़ाया जाये। अर्थात् बुढ़ापे से पहले और जवानी के बाद की आयु वालों को भी युवा वर्ग में सम्मिलित करना चाहिए क्योंकि इस आयु में मनुष्य में शक्ति, ताकत व रचनात्मक बुद्धि रहती है। यह बीस वर्ष का काल उसका श्रेष्ठ समय होता है। अधिकतर आविष्कार, नई-२ योजनाएं, बहादुरी के कार्य आदि भी इसी समय में मानव करता रहा है। अतः अभी भी इस सुझाव को मानते हुए हमें युवा वर्ग की आयु की सामा २१ वर्ष से ४० वर्ष की घोषित कर देनी चाहिए।

सभी देशों में औसत आयु बढ़ने के कारण, स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं की वृद्धि के कारण तथा शिक्षा के स्तर में विकास होने से यह कोई गलत कदम नहीं होगा अगर हम युवा वर्ग की आयु सीमा में वद्धि करते हैं। विशेषतया जब सभी वर्ग के लोग बढ़ापे को भी रोग स्तर पर रोकने के प्रयत्न कर रहे हैं और आधुनिक विचारधारा है कि युवा स्थिति मन या मन और शरीर की दशा पर आधारित है अतः युवा काल को ४० वर्ष तक बढ़ाना उपयुक्त ही होगा।

तनाव, भय, चिन्ता इत्यादि बुढ़ापा लाने के कुछ मुख्य कारण हैं। अब राजयोग के अभ्यास द्वारा इन कारणों से मुक्ति मिल सकती है, मानसिक तुष्टि, शक्ति में वृद्धि और चस्ती आती है तो क्यों न युवा काल की आयु अधिक रखी जाये। आयु सीमा बढ़ाने का एक अन्य कारण यह भी है कि अभी तक बाल वर्ष व बुढ़ों का वर्ष तो मनाया लेकिन शायद बीच की आयु के लोगों का वर्ष अलग से नहीं मनाया जायेगा। अतः इस आयु के लोगों को छोड़ना उचित नहीं होगा। अतः इन सभी कारणों से ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के विद्यार्थियों एवं सम्पर्क में आने वाले लाखों लोगों का विचार है कि युवा वर्ग की आयु की सीमा १६ से ४० वर्ष तक रखी जाये ताकि अधिक लोग इसमें सम्मिलित हो सकें।

अहिंसा को सर्वप्रथम स्थान देना चाहिए

हमारी राय है कि अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष में अहिंसा, निःशस्त्रीकरण, आपसी भाई-चारा को मुख्य स्थान देना चाहिए क्योंकि यदि परमाणु युद्ध छिड़ गया तो उससे हमारी सफलताएं धूल-धूरित हो जाएंगी। वर्तमान काल के युद्ध बहुत खर्चीले होते हैं जिससे सारी अर्थ-व्यवस्था बरबाद हो जाती है और इसमें अनेक प्रकार की आर्थिक-सामाजिक समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। जैसाकि सर्वविदित है कि हथियारों पर आजकल प्रति मिनट के हिसाब से लगभग दस लाख डालर खर्च हो रहे हैं और २०% युवा वैज्ञानिक युद्ध के कार्यों में ही संलग्न हैं। इसका अर्थ है विश्व में मानवों व धन को नाली में व्यर्थ बहाया जा रहा है। अतः हमारा सुझाव है कि युवा वर्ष में हमें इस समस्या को हल करने की ओर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए अन्यथा युद्ध के भड़कने पर हमारे सारे उन्नति के, विकास के कार्यक्रम जलकर राख हो जायेंगे व धएं की तरह

उड़ जायेंगे।

इस कार्य को अत्याधिक महत्व देने का एक अन्य भी कारण है। इतिहास साक्षी है कि पिछले २५०० वर्षों में करोड़ों युवकों को युद्ध की चक्की में आहुति दी जा चुकी है।

इससे भी अधिक संख्या में लोगों को अनेक देशों ने बन्दूक, गोले व हथियार बनाने के कार्य में लगा रखा है। इसमें शक नहीं कि देश की सुरक्षा अति आवश्यक है और युवकों को फौज में या पुलिस में भरती करने से उन्हें अपने देश की सेवा करने का सुअवसर मिलता है लेकिन प्रश्न उठता है कि "क्या इस युवा-शक्ति को अन्य रचनात्मक कार्यों में नहीं लगाया जा सकता है ताकि युद्ध व आपसी लड़ाई-झगड़ा समाप्त करके भाई-चारे की भावना की स्थापना हो सके। बुद्ध, महावीर, ईसा-मसीह, महात्मा गाँधी, सूफी व सन्तों ने मानव-मात्र से प्रेम करने की शिक्षा दी न कि अपने पड़ोसी को कत्ल करने की। लेकिन अफ़सोस है कि युवकों की आहुति हजारों वर्षों से विनाश (लड़ाई) के शैतान को खुश करने के लिए दी जाती रही है। और यह शैतान दिन प्रतिदिन अधिक बलवान व डरावना रूप धारण करता आया है तथा आणविक हथियारों रूपी इसके जबड़े व दांतों द्वारा सारे विश्व को समाप्त करने पर तुला हुआ है।

अतः अन्तर्राष्ट्रीय युवा-वर्ष में हमें इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि अभी तक जिस युवा शक्ति को विनाश के कार्य में प्रयोग किया जाता रहा है अब उसे रोका जाये।

नये प्रकार का युद्ध और स्नेह

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संस्थापक परमपिता परमात्मा शिव तथा फरिश्ता रूप ब्रह्मा बाबा ने हमें सभी को पूरी शक्ति से यही संदेश देने को कहा कि युवाशक्ति को बुराइयों से युद्ध करने में लगाओ। प्रत्येक मानव का जीवन का यह ध्येय होना चाहिए कि वह स्वयं भी शान्ति पूर्वक रहे तथा अन्य आत्माओं को भी शान्ति से रहने दे।

युवा शक्ति को आपस में भाई-भाई को मारने के लिए नहीं बल्कि सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों एवं कमियों को समाप्त करने में लगाना चाहिए। उन्हें शान्ति की स्थापना करने व नम्रता के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। उन्हें अहिंसक तरीके से शैतान से लड़ने में अपनी बहादुरी दिखानी चाहिए। हमें अब घोषित करना चाहिए कि युवा शक्ति अब स्नेह, सुरक्षा और विश्वास के मार्ग पर अग्रसर होती रहेगी और विश्व में यह खुशी का साम्राज्य स्थापना करने में मदद करेगी। हमें यह स्पष्ट करना होगा कि क्षमा व दया करने वाला ही अधिक बहादुर है क्योंकि कमजोर दिल, तंग दिल या डरपोक मानव बहादुर नहीं कहला सकता। युवकों को अब शान्ति का दूत बनना है न कि हिंसक युद्ध करना है। आत्मा को बचाना अधिक महत्वपूर्ण है न कि किसी को मारना। अतः युवकों में महानता का गुण भरना है।

रचनात्मक कार्यों द्वारा सामाजिक परिवर्तन

यह अच्छी बात है कि युवा वर्ष में अधिक से अधिक वृक्षों को लगाने का कार्यक्रम अपनाया है। अवकाश के दिनों कई स्थानों पर युवक सड़कें व नहरें बनाने के कार्य में रत रहते हैं। लेकिन इस प्रकार की सेवाओं के अतिरिक्त अगर युवक मनुष्यों में सद्गुणों व सदकार्यों का बीजारोपण करेंगे तथा आपसी-मेल मिलाप का पुल बनायेंगे तो वे समाज में आर्थिक व आध्यात्मिक रीति से एक श्रेष्ठ भूमिका अदा कर सकेंगे।

अन्य परिवर्तनों से पहले मानसिक व चारित्रिक परिवर्तन

ऐसा कहने में हमारा भावार्थ है कि मानसिक परिवर्तन पहले लाना चाहिए तभी अन्य प्रकार के परिवर्तन हो सकेंगे। युवकों को सामाजिक व नैतिक मूल्यों के महत्व को समझना चाहिए जिससे ही नये विश्व की स्थापना की नींव पड़ सकती है जहां पर किसी प्रकार का अन्याय, उत्पीड़न, अत्याचार व शोषण नहीं होगा बल्कि पारिवारिक स्नेह व प्यार का वातावरण होगा।

हमें यह भी ध्यान रखना है कि जिन कार्यक्रमों को करने में सरकार या उसकी सहयोगी संस्थाएं हिचकिचाती या शर्म महसूस करती हैं उन्हें गैर-सरकारी संस्थाओं को अपनाना चाहिए। वे युवकों में ऐसी शक्ति भर सकती हैं ताकि युवक अहिंसा पर आधारित समाज की पुनर्स्थापना कर सकें। युवकों में कार्य करने की इच्छा-शक्ति बलवान होती है

केवल उन्हें सही मार्ग प्रदर्शन व रचनात्मक कार्यों के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

अन्य सुझाव

युवकों को आदर्श जीवन बनाने के लिए अहिंसक बनाना जरूरी है। उन्हें एक विशेष प्रकार की क्रान्ति लाने का पुरुषार्थ करना है जो अहिंसा व विचार परिवतन पर आधारित है। इसके लिए ३२ चित्रों की एक प्रदर्शनी बनाएं। इन्हें हम अनेक विश्व-विद्यालयों व कालेजों में प्रदर्शित कर सकते हैं। इस प्रदर्शनी द्वारा युवकों को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

प्रतिदिन व महीने के लिए विचार

महापुरुषों की जीवनी से ३६५ स्लोगन एकत्रित करके हमें सभी समाचार पत्रों में प्रतिदिन "आज का विचार" के रूप में देना चाहिए तथा सभी विश्व-विद्यालयों व महा-विद्यालयों के बोर्ड पर लगाने चाहिएं इससे युवकों के मानसिक विचारों में परि-वर्तन आयेगा।

इसके अतिरिक्त, अथवा इसकी बजाय १२ ऐसे आकर्षित स्लोगन चुन लेने चाहिए जिन्हें हर महीने अपना सकें। और सभी कालेज व विश्व-विद्यालयों के बोर्ड पर लगा सकें। प्रैस व प्रसारण के अन्य साधनों को भी इन स्लोगन का प्रचार करने के लिए अनुरोध करना चाहिए।

हरेक व्यक्ति कम से कम एक को शिक्षित बनायें तथा उसे नम्रता व सहनशीलता का पाठ पढ़ायें

सर्व प्रथम हमें युवकों को यह स्लोगन देना चाहिए "प्रत्येक एक को पढ़ायें"। १९८५ वर्ष में हर स्त्री व पुरुष एक प्रौढ़ अथवा बालक को पढ़ाने का प्रण लें और उसमें सहयोग, अहिंसा व शान्ति की भावना भरे। जिन देशों में अधिक जनसंख्या अनपढ़ हैं वहाँ भी प्रत्येक स्त्री-पुरुष को चाहिए कि कम से कम एक को नम्रता, सहनशीलता व अहिंसा का पाठ पढ़ाये।

राजयोग शिविर, सम्मेलन, महोत्सव व कान्फ्रेंस का आयोजन

हमें विश्वास है कि सभी देशों में युवकों के लिए कान्फ्रेंस, सेमिनार व उत्सव मनाये जायेंगे जहां युवकों की उन्नति व विकास के लिए रचनात्मक कार्य किया जायेगा। इसके अतिरिक्त मेरा सुझाव है कि युवकों के लिए राजयोग शिविरों का भी आयोजन किया जाये। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय इस प्रकार के शिविरों का आयोजन अनेक वर्षों से करता आया है और देखा गया है कि इनके परिणाम-स्वरूप हजारों युवकों के जीवन में क्रान्तिकारी परि-वर्तन आया है। उन्हें नया उत्साह-उमंग मिला है तथा उन्होंने सुधार करने के नए तरीके अपनाए हैं। उनमें आत्म-विश्वास, जाग्रति की भावना भरी है जिससे ड्रग व आत्म-हत्या करने आदि की प्रवृति से छुटकारा मिला है। इन शिविरों द्वारा उनको आर्थिक व सामाजिक लाभ भी हुए हैं। अतः हम अपने अनुभव के आधार पर इन शिविरों का महत्व सभी को बताना चाहते हैं।

विकास व शाँति

हमारे विचार से स्व-उन्नति सभी प्रकार की उन्नति से श्रेष्ठ है जिससे भ्रातृभावना, सहनशीलता, अहिंसा, नम्रता आदि सद्गुणों का विकास होता है। हम समझते हैं युवा वर्ष में युवकों के लिए विकास-शान्ति-सहयोग का जो स्लोगन चुना गया है, उस में शान्ति को सबसे अधिक महत्व देना चाहिए और युवकों को ऐसे ही कार्यों में भाग लेना चाहिए जहां शान्ति का कार्य होता है। यह तो सभी को मालूम है कि बहुत से कार्य विकास के नाम पर ऐसे होते रहे हैं जिनसे वातावरण दूषित, वायु प्रदु-षण तथा समाज को अन्य अनेक प्रकार के नुकसान हुए हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना विश्व में शांति स्थापना हेतु हुई थी। अतः इस उद्देश्य को सामने रखकर ही सभी कार्यक्रम बनाने चाहिएं। हांलाकि शान्ति-स्थापना करने के लिए आर्थिक सामाजिक व साँस्कृतिक विकास अत्यावश्यक है। क्योंकि अगर विकासशील अथवा अविकसित देशों में अधिकतर लोगों के लिए खाने की कमी है अथवा गरीबी, निरक्षरता आदि है तो केवल शान्ति, शान्ति कहने से उनकी सन्तुष्टि नहीं होगी।

हम इसे और अधिक स्पष्ट इस प्रकार करना चाहेंगे। मान लो हमारे सभी बिकास के लिए कार्य-क्रम अच्छी प्रकार से कार्यान्वित हो जाते हैं और लोगों का रहन-सहन भी उन्नत हो जाता है, गरीबी व निरक्षरता भी कुछ हद तक दूर हो जाती है लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि विनाश के लिए जो

आजकल प्रयत्न हो रहे हैं और शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्र बनाये जा रहे हैं वे इनसे हजारों गुणा अधिक शक्तिशाली हैं। यह तो इसी प्रकार है कि जैसे कि बकरी को अच्छी प्रकार खिला-पिलाकर कसाई के पास ले जाना अथवा उसे सोटी मारना। अत: गैर सरकारी संस्थानों को चाहिए कि वे युवकों में भ्रातृत्व, स्नेह व आपसी सहयोग की भावना जाग्रत करें। वे प्रण लें कि किसी हालत में वे हिंसा नहीं करेंगे और देश व समाज को तोड़-फोड़ द्वारा नुकसान नहीं पहुँचायेंगे। यदि हम युवकों को तोड़-फोड़ अथवा हिंसक कार्यों से दूर रहने को प्रेरित कर सकें तो १९८५ का युवा-वर्ष सफल हो जायेगा।

हमारा सुझाव है कि गैर-सरकारी संस्थानों को विशिष्ट शान्ति पुरस्कार प्रदान करने के लिए फंड एकत्रित करना चाहिए ताकि हर वर्ष राष्ट्र संघ ऐसी संस्था को पुरस्कार दे सके जिसने इस दिशा में सबसे अधिक कार्य किया हो। वर्ष १९८५ में इस प्रकार की संस्था को ही पुरस्कृत करना चाहिए जिसने अधिक से अधिक युवकों को शान्तिप्रिय तथा नम्रता, सहनशीलता का गुण धारण करने को प्रेरित किया हो। इससे अन्य संस्थाओं को भी इस प्रकार के प्रयत्न करने की प्रेरणा मिलेगी और इस प्रकार राष्ट्रसंघ का प्रमुख उद्देश्य (शान्ति-स्थापना) की पूर्ति हो सकेगी।

वर्ष के लिए स्लोगन

युवक (YOUTH) शब्द से युवकों को इस वर्ष में यह संदेश लेना चाहिए कि 'Y' का अर्थ है अथक सेवा (Yeoman Service) 'O' का अर्थ हैं अनुशासन (orderliness); 'U' का अर्थ संगठन व आवश्यकता (Unity & Utility). 'T' का अर्थ सहनशीलता (Tolerance) and 'H' का अर्थ मिलना (Harmony)। युवकों को इस प्रकार के गुणों को धारण करने के लिए प्रेरित करके ही हम अन्तर्राष्ट्रीय युवक-वर्ष सफलता पूर्वक मना सकेंगे। —जगदीश

बड़ा-दिन

(ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

गत वर्षों में—
दिन बड़े आए और गए कई
छोटे ही रहे पर—
आज का दिन रहा 'बड़ा' असल में।
गुज़रा जो "बड़े-बाप" की याद में॥
तोड़े थे फल पहले भी क्रिस्मस ट्री के,
बिन ज्ञान-फल निष्फल रहे निरीह से,
ऐसे तो दिन बड़े आए औ गए कई !
छोटे ही रहे पर—
आज का दिन रहा बड़ा असल में।

पाया जो अमर-फल कल्प वृक्ष से॥
विगत वर्षों में भी जलाई थी कैन्डल्स कई
रौशन हो न सकी मनसा अन्धकारमयी
ऐसे तो दिन बड़े आए और गए कई
छोटे ही रहे पर—
आज का दिन रहा बड़ा असल में।

ज्योत अविनाशी जलाई अन्तःकरण में॥
बाँट मिठाई खाई खिलाई थी गए साल भी
हो न सका पर मन मीठा
ऐसे तो दिन बड़े आए और गए कई
छोटे ही रहे पर—
आज का दिन रहा बड़ा असल में।

जब मिठास अलौकिक भरी इस मन में॥
अर्ध-रात्रि किए घण्टे वादन
दी मुबारकें चुने शब्द मन-भावन
नाद क्षणिक हुआ पर
मोद न रहा हर पल
ऐसे तो दिन बड़े आए और गए कई
छोटे ही रहे पर—
आज का दिन रहा बड़ा असल में

नाद अनहद पुरुषोत्तग युग संगम में
आओ मिल करें "बड़ा दिन" मनाएँ
"बड़े-बाप" की पहचान करें कराएँ
न रहे छोटा दिन कोई भी
स्मृति "बड़ी", "बड़े" कर्त्तव्य
स्थिति "बड़ी", बड़ी "समर्थी"
तो हर दिन 'बड़ा', ओ रथी !

धर्म हिंसा नहीं सिखाता

ब्र०कु० सूरज कुमार, माउन्ट आबू

एक ओर धरती के चेतन सितारों (मनुष्यों) की शान्ति की पुकार और दूसरी ओर वसुधा के वक्षस्थल पर बढ़ती हुई हिंसा की अग्नि, कैसी विडम्बना है ! मानव ने मानवता को तो लोप कर ही दिया, अब वह सम्पूर्ण मानव जाति के संहार के लिए तैयार है। मानव जाति को नष्ट करने की होड़ में वह अन्धा हो चुका है। ऐसे अन्धकार-पूर्ण विकराल काल में सच्चा धर्म ही मानव की रक्षा कर सकता है। तो आओ आज हम धर्म के सत्य स्वरूप पर दृष्टि डालें।

धर्म क्या है ?

"धर्म जीवन की उन श्रेष्ठ धारणाओं का नाम है जिन पर मनुष्य-जीवन सुख-शान्ति पूर्वक प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सके"। इस सृष्टि-चक्र में अनेक धर्म-स्थापक आये और उन्होंने मनुष्यों को धर्म के विभिन्न सिद्धान्त दिये। जैसे इसाई धर्म का मूल 'प्रेम' बना तो बौद्ध धर्म का मूल 'दया'। भारत में किसी ने 'अहिंसा' को परम-धर्म कहा तो किसी ने त्याग, तपस्या, व मानव-सेवा को धर्म का अभिन्न अंग बताया। परन्तु धर्म की सम्पूर्ण व्याख्या, धर्म के रक्षक परमपिता परमात्मा स्वयं ही करते हैं। यहाँ हम उन्हीं के ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर व्याख्या करेगें।

धर्म का इंगलिश शब्द है—'RELIGION'। इस religion शब्द के आठ अक्षरों में धर्म की व्याख्या अन्तर्निहित है। यहां R=Revere (पवित्र) E=Ecstasy (आनन्द), L=Love (प्रेम), I=Introspecton (अन्तर्दर्शन) G=God (भगवान), I= Impartial (निष्पक्षता), O=Oneness (एकता) N=Non-violence (अहिंसा)

अर्थात धर्म की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि जब मनुष्य अन्तदर्शन करके अर्थात् स्वयं को आत्मा जानकर, परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ता है, तब उसके जीवन में पवित्रता, प्रेम, अहिंसा, एकता का भाव, आनन्द व निष्पक्षता का भाव आता है और तब ही उसको सम्पूण शान्ति का अनुभव होगा।

धर्म दो प्रकार के हैं—एक हैं देह के धर्म, जो सभी के अलग अलग हैं, जैसे हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई आदि। और दूसरा है—आत्मा का धर्म अर्थात् स्व का धर्म और वह है 'शान्ति', जो कि सभी का एक ही है। देह के सभी धर्मों का भी अन्तिम ध्येय, मनुष्य को आत्मिक स्वधर्म में स्थित करना ही है।

धर्म शान्ति सिखाता है—

मनुष्य को धर्म की आश्वयकता कब पड़ी ? विचारक समझ सकते हैं कि जब किन्हीं कारणों से मनुष्य का मन अशान्त हुआ होगा, तब ही उसने शान्ति के लिए धर्म की रचना की होगी। इसलिए हर धर्म स्थापक ने मनुष्य जीवन में शान्ति लाने के लिए विभिन्न सिद्धान्तों का प्रति पादन किया। अतः हर धर्म का मूल शान्ति है, न कि हिंसा।

हिंसा धर्म के नाम पर कलंक है —

यदि कोई धर्मावलम्बी शान्ति के लिए हिंसा का सहारा लेते हैं या धर्म की रक्षा के लिए 'हिंसा' को ढाल बनाते हैं तो स्पष्ट है कि उन्होंने धर्म के मर्म को नहीं समझा। **धर्म एक अति पवित्र दिशा है और हिंसा अमानवीयता। हिंसा व धर्म साथ साथ नहीं हो सकते। जो धर्म से हिंसा को जोड़ते हैं, उनका धर्म अधिक स्थाई नहीं हो सकता। धर्म में हिंसा का प्रवेश, धर्म के विनाश का बिगुल है।** अतः धर्म का नारा लगाने वालों को अन्तर्मुखी होकर चिन्तन करना चाहिए कि क्या उनका हिंसा का पथ धर्मानुकूल है या धर्म के नाम पर कलंक है ? जो कि मनुष्य को धर्म से विमुख करता है और नास्तिकता को बढ़ावा देता है।

धर्म के नाम पर बलिदान—

लोग धर्म के नाम पर बलिदान करते आएं हैं, परन्तु

धर्म स्वयं भी बलिदान होता आया है। इसी "धर्म के नाम पर बलिदान" के नारे से आज भी लोग धर्म के नाम पर हिंसा को बढ़ावा देते हैं। परन्तु अब समय की पुकार है कि हे धर्म-प्रेमियों, धर्म की रक्षा के लिए इस क्रोध व अहंकार का बलिदान करो। यदि तुम्हारे अन्दर ही अग्नि जलती रहेगी तो तुम दूसरों की अग्नि कैसे बुझाओगे। अर्थात तुम शान्ति का साम्राज्य कैसे लाओगे। इसलिए पवित्र धर्म अपनी रक्षा के लिए तुम्हारे मनोविकारों की बलि चाहता है। तब ही धर्म की वेदी पावन होगी, धर्म का उत्थान होगा और मानव व मानवता की रक्षा होगी। इसलिए यदि सचमुच तुम्हें धर्म से प्रेम है तो तुम ये बलिदान करो। देह के बलिदान का महत्व अब नहीं रहा अब तो इस देह-अंहकार का बलिदान दो, तब तुम्हारा पवित्र धर्म विश्व की रक्षा करेगा।

धर्म, एकता व प्रेम सिखाता है—

धर्म मनुष्य को अन्तर्दर्शन कराता है अर्थात मनुष्य को आत्मा का ज्ञान कराकर, उसका नाता परमात्मा से जोड़ता है। अतः एक धर्मावलम्बी यह समझता है कि परमात्मा सभी मनुष्यात्माओं का परमपिता है। उस नाते हम सब आत्माएँ एक विशाल विश्व परिवार के सदस्य हैं। इस कारण उसके मन में एक परिवारिक अनुभूति व पवित्र स्नेह रहता है। धर्म केवल यही ही नहीं सिखाता कि हम रोज़ सवेरे उठकर, ऊँची आवाज़ में प्रभु के गुण गायें और दिन में प्रभु की सन्तान मनुष्यों पर बन्दूक चलायें। यह सत्य है कि भगवान से प्यार करने वाला मनुष्य, भगवान की रचना से अवश्य प्यार करेगा। उसकी रचना से प्यार न करना स्वार्थी ईश्वरीय प्यार का प्रतीक है।

परन्तु कितना आश्चर्य है कि एक ओर इसाई धर्म का मूल उपदेश' प्रेम' है। ईसा मसीह ने मानव को सत्य-प्रेम का पाठ पढ़ाया था, परन्तु आज उसकी सन्तान मानव जाति को पृथ्वी से पूर्णतया नष्ट करने को तैयार है। क्या हो गया है। विश्व को प्रेम का पाठ पढ़ाने वालों को, जो कि अपनी ही जाति को नष्ट करने पर उतारू हैं। काश ! कि इन्हें ईसा की आवाज़ फिर से सुनाई दे जाए और ये प्रेम का पथ अपना लें।

धर्म अहिंसा सिखाता है—

यद्यपि "अहिंसा परमोधर्म" का नारा अति पुराना है तो भी इतिहास में धर्म के नाम पर ही बड़े बड़े ताण्डव नृत्य हुए। हिंसा भी दो प्रकार की है—**एक काम विकार की हिंसा, जो वास्तव में आत्मा की हिंसा है क्योंकि काम भोग आत्म की शक्ति को नष्ट कर डालता है। दूसरी हिंसा है—क्रोध की, जिसके वश मनुष्य जीव प्राणियों पर प्रहार करता है।** हिंसा पहले मन में ही उत्पन्न होती है अतः आवश्यकता है, मनुष्य के मन को शान्त करने की। और वह होगी, काम व क्रोध की अग्नि को बुझाने से। क्योंकि धर्म मनुष्य को प्रेम व पवित्रता सिखाता है अतः इससे ये हिंसा की अग्नि शान्त हो जाती है। सच्चे धर्मावलम्बी के मन में काम व क्रोध की हिंसा नहीं उभरती, उनका मन शान्ति की गहन अनुभूतियों में खोया रहता है।

धार्मिक स्थलों पर हिंसा त्याज्य है—

सभी धार्मिक स्थान उन महान विभूतियों की यादगार हैं जिन्होंने मानव को पवित्रता, प्रेम, दया व अहिंसा का पाठ पढ़ाया था। और उन पवित्र स्थलों पर यदि कोई हिंसा भड़काये या हिंसात्मक सामग्री रखें तो क्या इसे उन महान पुरुषों का अपमान नहीं कहेंगे। इसलिए धर्मस्थलों पर पूर्ण अहिंसा व शान्ति का वातावरण बनाकर रखना, यह भी धर्म गुरूओं व धर्म के ठेकेदारों की जिम्मेदारी है। धर्म-स्थान पवित्र स्थान हैं, उनमें किसी भी पापी को शरण देने या लेने का अधिकार नहीं। नहीं तो पवित्र स्थान को दूषित करने का पाप उन्हें स्वतः ही खा जायेगा। इसलिए सभी धर्मों के धार्मिक स्थान ऐसे हों जहाँ जाकर मनुष्य, सुख, शान्ति व चैन का अनुभव कर सके। क्योंकि वहाँ मनुष्य शान्ति के लिए ही जाता है और यदि वहाँ भी शान्ति न हो तो मनुष्य कहाँ जायेगा ?

हिंसा से धर्म की रक्षा या वृद्धि नहीं होती—

धर्म जैसी पवित्र चीज़ की रक्षा पवित्र साधनों से ही होती है न कि तोप तलवारों से। "Religion is Might" (धर्म में शक्ति है)—यह उक्ति पूर्णतया सत्य पर आधारित है। सत्य-धर्म में वह शक्ति स्वतः

ही होती है जो कि वह स्वयं की व स्वयं के अनुयायियों की रक्षा कर सके। सब जानते हैं कि धर्मपिताओं को कितनी यातनाएँ दी गईं, परन्तु अत्याचारी शासकों की तलवारें उनके धर्म को नष्ट नहीं कर सकीं। और धर्म में वह शक्ति है—पवित्रता (Purity) और शान्ति (Silence) की। इस शान्ति में विज्ञान की शक्ति से भी अधिक बल है। **अत: जो लोग धर्म की रक्षा या वृद्धि करना चाहते हैं वे पवित्रता व शांति में वृद्धि करें। धर्म के ऊपर पवित्रता की छत्रछाया लगायें और शान्ति का कवच पहनाएं, फिर कोई भी बाह्य या मायावी शक्ति धर्म को नष्ट नहीं कर सकती।**

धर्म स्वत: ही सब कुछ देता है—

धर्म के लिए कुछ भी माँगने की आवश्यकता नहीं। धार्मिक स्वायत्तता की माँग यथार्थ नहीं। धर्म तो मनुष्य की सर्व मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाला है। धर्म भिखारी नहीं, दाता है। यदि धर्म के अनुयायी यथार्थ धर्म स्वरूप में स्थित हैं तो धर्म उन्हें यहीं सम्पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करता है। इसलिए हमें धर्म के नाम पर 'माँग' करके, धर्म को कमजोर सिद्ध करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। जब अधर्मी लोग भी अशान्त व परेशान होकर धर्म की आड़ में आते हैं तो धर्म ही उन्हें शान्ति देता है। तो हम धर्म के मूल सिद्धान्तों को भूलकर बाह्य माँग क्यों करें?

धर्म और आध्यात्मिकता को मिलाओ—

धर्म के विकृत स्वरूप होने का कारण धर्म से आध्यात्मिकता को अलग कर देना है। इसके फल-स्वरूप, धर्म मात्र दैहिक धर्मों के स्वरूप में ही रह गया। आत्मा के सार्वभौमिक धर्म की ओर मनुष्य का ध्यान नहीं गया। इस कारण धार्मिक भेद-भाव व झगड़े बढ़ते गये। अब पुन: धर्म के पवित्र स्वरूप को जागृत करने के लिए हमें उसमें आध्यात्मिकता को मिलाना होगा।

दैहिक धर्म (मज़हब) केवल परमात्मा की महिमा गाना सिखाता है जबकि आध्यात्मिकता परमात्मा के गुणों का जीवन में समावेश कराती है। दैहिक धर्म मनुष्य को परमात्मा का दास बनना सिखाता है और आध्यात्मिकता उसे परमात्मा जैसा, प्रेम, शान्ति, दया, क्षमा, अहिंसा व शक्ति का स्वरूप बनना सिखाता है। दैहिक धर्म पूजा पाठ व रीति रिवाज सिखाता है और आध्यात्मिकता मनुष्य को पावन पूज्य बनाती है। अत: अब आध्यात्मिकता को धर्म से जोड़ दें तो धर्म का पवित्र स्वरूप पुन: निखर उठेगा।

इसलिए हे धर्म-मद चूर प्राणी, **जिसका तुम संहार करते हो वे भी तुम्हारे ही बन्धु हैं। जिनको मारकर तुम शान्ति चाहते हो, वे भी शान्ति के इच्छुक हैं। जिनको तुम स्वयं से भिन्न समझ कर घृणा करते हो, वे भी भगवान के ही सुपुत्र हैं। अत: इस विश्व में एकता, शान्ति, प्रेम और अहिंसा को पुन: जागृत करो और एक बार फिर मनुष्य को सुख-शान्ति व सुरक्षा पूर्वक जीने का अधिकार दो।**

□

क्या मनुष्य को अपने भोजन के लिए हिंसा का अधिकार है?

(पृष्ठ २६ का शेष)

से हुई है या नहीं। कातिल पर इस अपराध का दोष लगाया जाता है और उसे मृत्यु दंड या उमर कैद होती है। वह सारी उमर जेल में पड़ा हुआ क्षीण होता जाता है और उसके मित्र और सम्बन्धी भी उसका त्याग कर देते हैं। वह बिल्ला और रंगा की तरह अपराधी कहलाया जाता है जिनको कि चौपड़ा के बच्चों की हत्या के अपराध में फाँसी पर लटका दिया गया था। तब मनुष्य इसे नीच कार्य समझ कर इससे शिक्षा क्यों नही लेता कि वह जानवरों की हत्या अपने भोजन के लिए न करे। जिससे वह उस दर्द से बच सके जो कि किसी को फाँसी देने या जेल से अनुभव होता है।

मनुष्य को इस सच्चाई पर गहराई से सोचना चाहिए कि अगर पशु की हत्या उसके कर्मों की वजह से हुई तो हत्यारे और माँस खाने वालों का एक दिन क्या होगा? इसके ये कर्म उसे कहाँ ले जाएंगे। मनुष्य कर्मों का सिद्धान्त स्वयं पर क्यों नहीं लगाता?

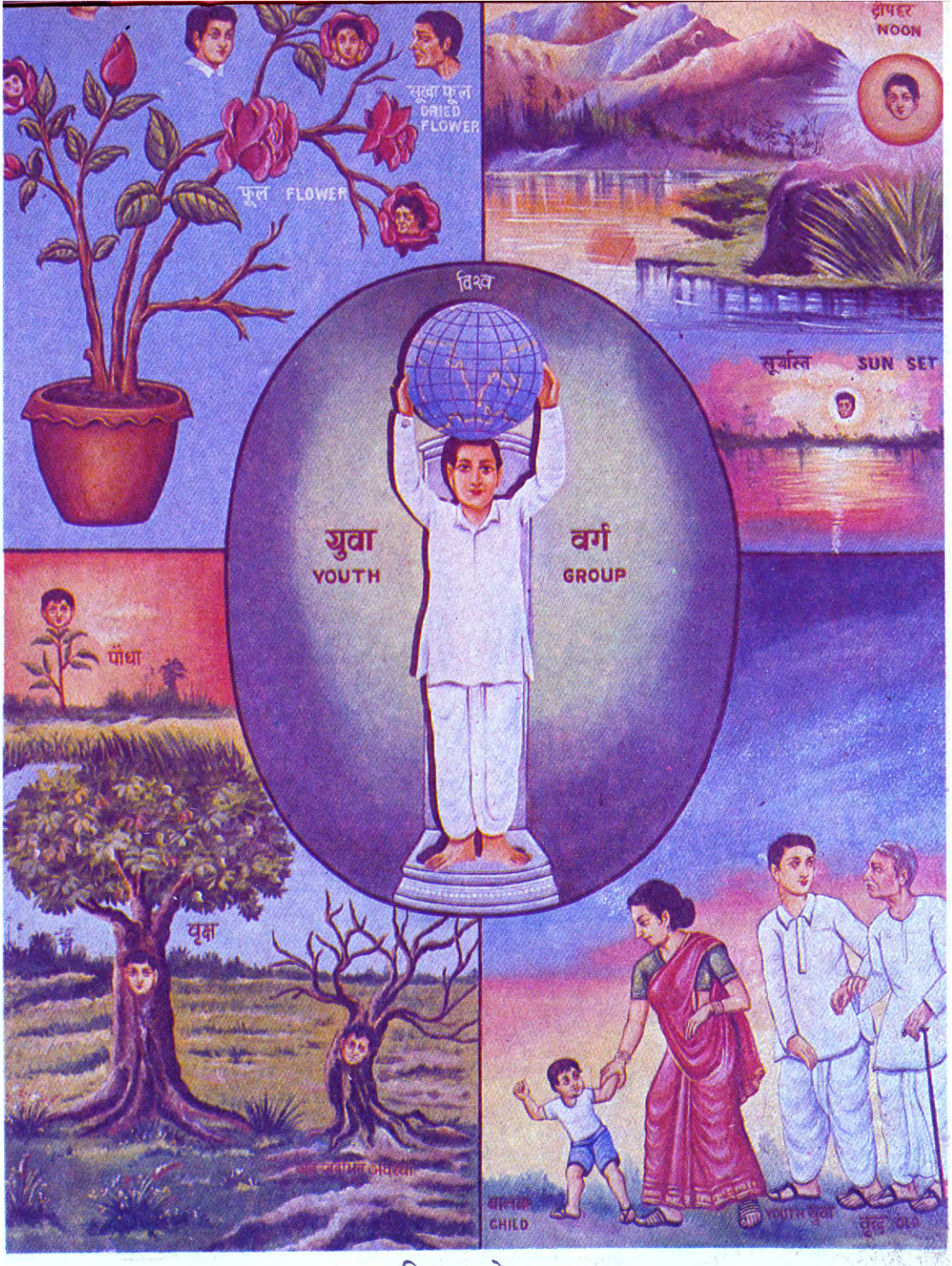

युवा-विश्व के स्तम्भ-

युवा वर्ग ही विश्व का आधार सतम्भ है। हर पहलू में युवावस्था का अत्यन्त महत्व है। उदाहरणार्थ एक कली बचपन का प्रतीक है, खिला हुआ फूल युवावस्था का प्रतीक है और मुरझाया हुआ फूल वृद्ध अवस्था का प्रतीक है। तीन अवस्थाओं में से खिला हुआ फूल ही अधिक महत्वशाली फूल है। इसी प्रकार सूर्योदय बचपन का प्रतीक है, सूर्यास्त वृद्धावस्था का प्रतीक है और पूर्ण उदय हुआ सूर्य युवावस्था का प्रतीक है। संसार के महत्व पूर्ण कार्य तो अधिकतर सूर्य की युवावस्था के समय ही किये जाते हैं। पेड़ से फल की प्राप्ति भी न हो बचपन के प्रतीक छोटे कोमल पौधे से होती है और न ही वृद्धावस्था के प्रतीक सूखे पतझड़ वाले पेड़ से ही हो सकती है। लेकिन पेड़ के युवावस्था में ही फल की प्राप्ति होती है। और आप देखेंगे कि युवक ही बच्चे और बूढ़े का भी सहारा बनता है।

युवा-विश्व की आशा-

चाहे भौतिक जगत में, चाहे आध्यात्मिक जगत में युवा वर्ग ही विश्व की आशा है। जिस प्रकार युवक ही देश की रक्षा करने में महत्व पूर्ण भूमिका अदा करते इसी प्रकार अगर युवक लक्ष्य रखे तो वह 5 विकारों रूपी माया दुश्मन से भी विश्व की रक्षा कर सकता है। जैसे बाढ़ में डूबने वालों का सहारा युवक ही बनता है। जैसे ही नशीली वस्तुओं की बाढ़ में डूबते हुए मनुष्यों का चारित्रिक उत्थान भी वही कर सकता है। युवा ही अपना रक्तदान करके अनेकों को जीवनदान देने में सक्षम है और युवक अपने शुद्ध सकल्पों के प्रकम्पन्नों से दुखी अशान्त आत्माओं को शान्ति का दान भी कर सकता है। देश के निर्माण कार्य में युवक का श्रमदान सर्वाधिक महत्व रखता है। तो परमपिता परमात्मा युवकों को ही यह सन्देश दे रहे हैं कि हे युवक, आप दुनिया में आध्यात्मिक क्रान्ति लाकर सृष्टि का नव निर्माण कर सकते हो। आप ही विश्व की आशा हो।

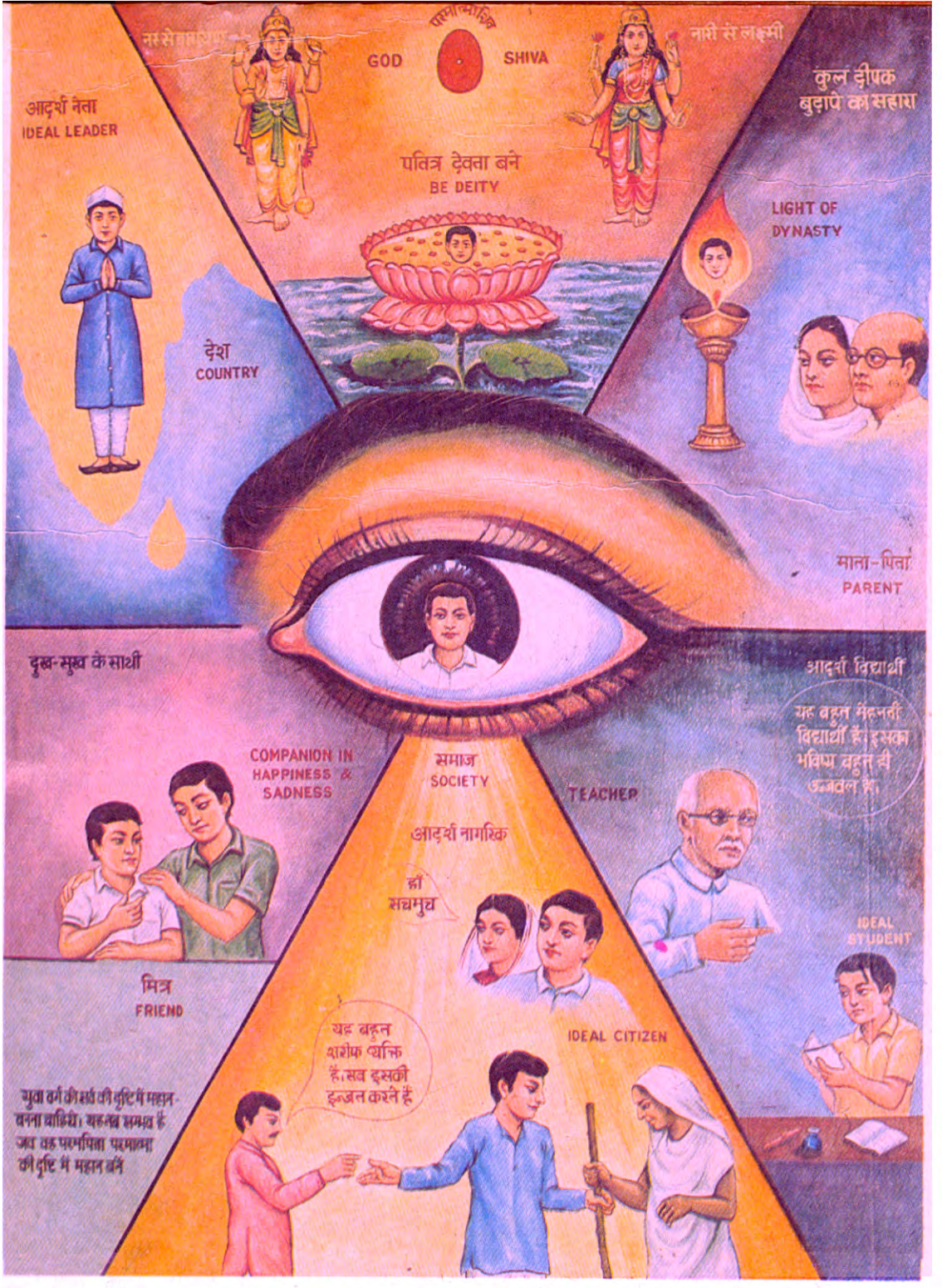

युवा–विभिन्न वर्गों की दृष्टि में-

हर वर्ग, युवक के प्रति कई आंकाक्षायें रखने के कारण उसे अलग अलग दृष्टि से देखता है। माता पिता चाहते हैं उनका बच्चा दीपक बनकर कुल को रोशन करे और उनके बुढ़ापे का सहारा बने। शिक्षक के मन में रहता है कि उसका विद्यार्थी एक आदर्श विद्यार्थी बने। समाज उसे एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में देखना चाहता है। मित्र चाहता है कि वह उसके सुख-दुख का साथी बने और आज युवक से देश यह आशा करता है कि वह एक आदर्श नेता बनकर देश का सही मार्ग-दर्शक बने। अब परमपिता परमात्मा चाहते हैं कि युवक मनुष्य से देवता बने अथवा नर से श्री नारायण बने और नारी श्री लक्ष्मी बनें।

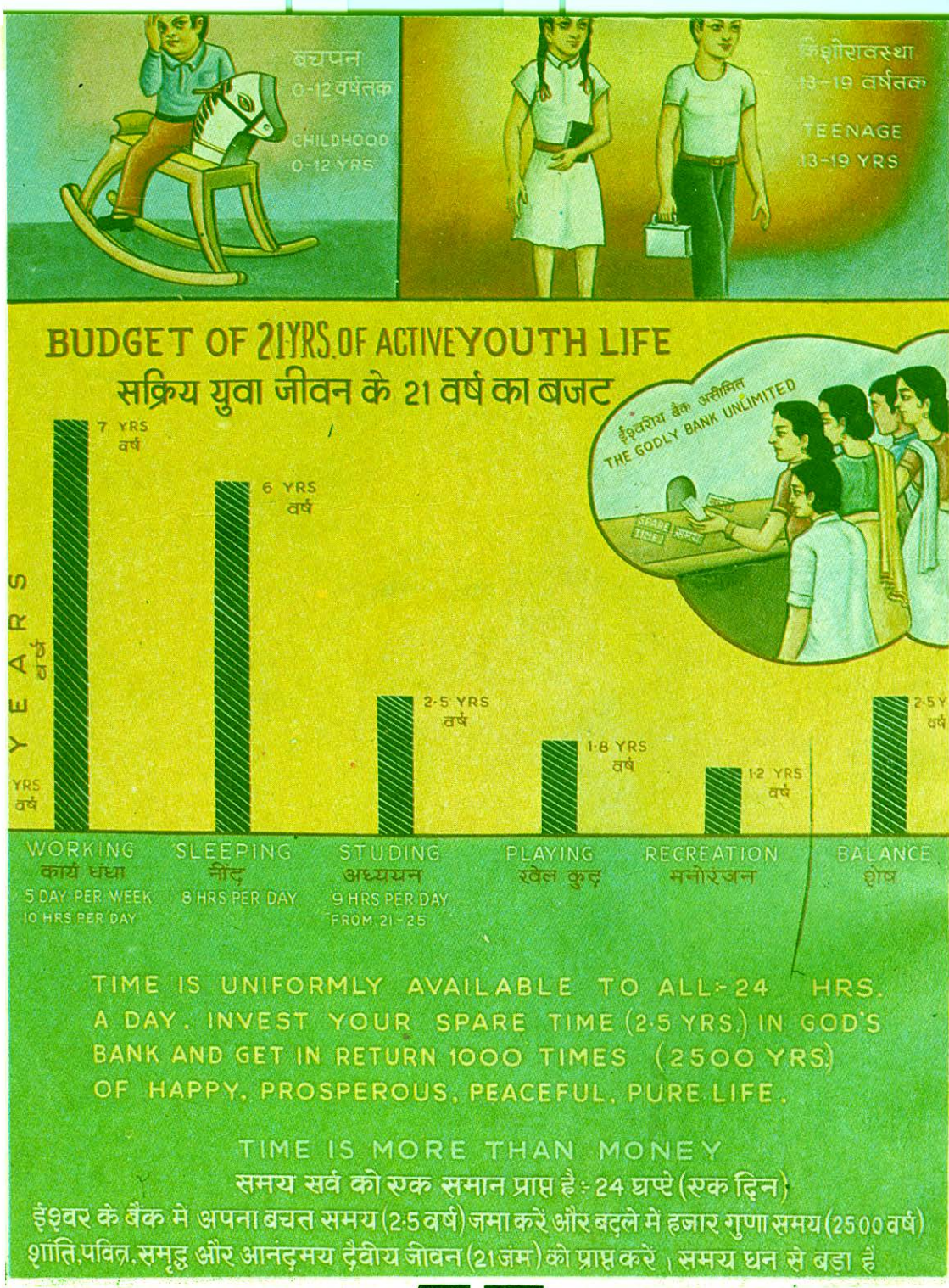

युवा-काल

अगर व्यक्ति की औसत आयु 60 वर्ष मानी जाए तो 19 वर्ष की उम्र से 40 वर्ष की उम्र तक अर्थात् 21 वर्ष सक्रिय युवा जीवन काल माना जा सकता है। अगर युवक इसी 21 वर्ष में प्रतिदिन 10 घण्टे के हिसाब से 5 दिन सप्ताह में काम करे तो उसके 6 वर्ष कार्य धन्धे में लग जाते हैं। इसी प्रकार 8 घण्टा प्रतिदिन के हिसाब से 6 वर्ष नींद में व्यतीत हो जाते हैं। यदि वह 25 वर्ष की उम्र तक प्रतिदिन 9 घण्टे अध्ययन करता है तो युवाकाल के ढ़ाई वर्ष पढ़ाई में लग जाते हैं। प्रतिदिन कुछ समय खेलने में देने से 1 वर्ष 8 मास खेल कूद में लग जाते हैं और मनोरंजन में कुछ समय देने से 1 वर्ष 2 मास यूं ही बीत जाते हैं। परिणामतः आप देखेंगे कि 21 वर्ष में से केवल ढ़ाई वर्ष ही शेष रह जाते हैं। अब परमपिता परमात्मा कहते हैं कि हे बच्चे, युवा जीवन के शेष बचे हुए ढ़ाई वर्ष मेरे ईश्वरीय बैंक में जमा कर दें और बदले में मेरे से हजार गुणा समय अर्थात् 2500 वर्ष 21 जन्म के लिए शान्तिमय, पवित्र, समृद्ध और आनंदमय देवी जीवन को प्राप्त करें। याद रखें–समय धन से भी बड़ा खजाना है।

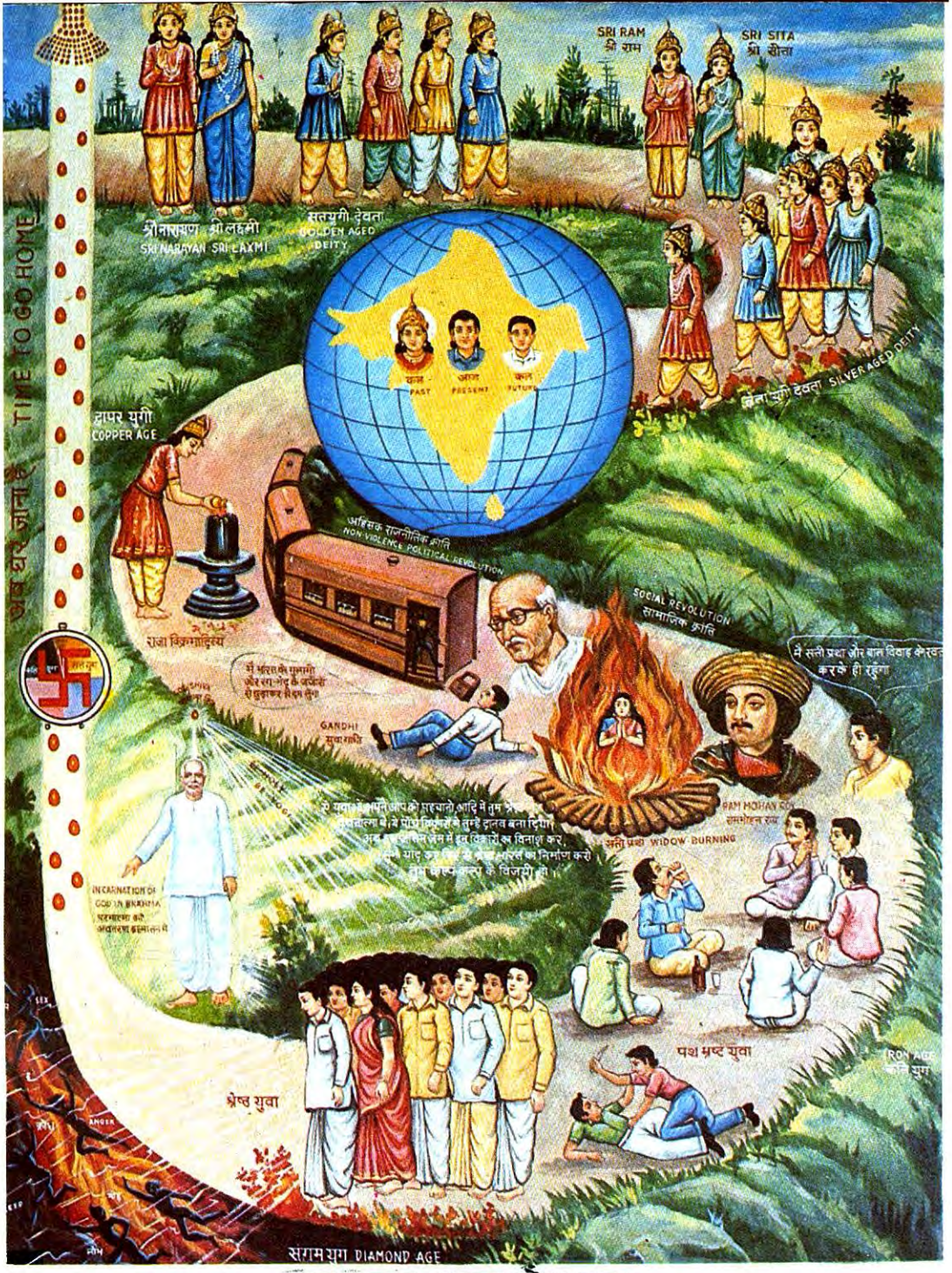

युवा कल, आज और कल

प्राचीन काल में इसी भारत भूमि पर स्वर्ग था जहां सतयुग में श्री लक्ष्मी और श्री नारायण जैसे तथा त्रेतायुग में श्री राम और श्री सीता जैसे देवतुल्य युवक थे जिनमें धर्म नीति व राजनीति अपनी सर्वोच्च स्थिति में थी। द्वापर काल में पराक्रमी न्यायकारी राजा विक्रमादित्य जैसे युवक भी हुए हैं। समयान्तर में कलियुग के अन्दर भी महात्मा गांधी जी जैसे युवक ने स्वतन्त्रता संग्राम का बिगुल बजाकर अहिंसक राजनीतिक क्रान्ति जागृत कराई। राजाराम मोहनराय जैसे युवक ने सती प्रथा जैसी कुरीति बन्द कराई। लेकिन आज का युवक देखिये, वह धर्मविहीन, श्रेष्ठ राजनीति विहीन, पथ विमुख, चरित्र हीन, जीवन के लक्ष्य से दूर और खाओ पियो मौज उड़ाओ की ऐश आराम वाली जीवन जीना चाहता है।

अब इस पुरूषोत्तम संगमयुग में निराकार परमपिता परमात्मा शिव पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर युवकों के प्रति दिव्य सन्देश दे रहे हैं कि हे युवको, "अपने आपको पहचानो, आप आदि में श्रेष्ठ देवात्मा थे, इन पांच विकारों ने तुम्हें दानव बना दिया, अब इस अन्तिम जन्म में मुझे याद करो और इन विकारों को जीत कर फिर से श्रेष्ठ भारत का निर्माण करो"।

युवा और सकंल्प

युवा अवस्था तो वास्तव में एक वरदान है। लेकिन युवकों में यह वरदान विकृत सकंल्पों के कारण अभिशाप के रूप में परिवर्तित हो चुका है। जिस प्रकार बांध बिना, तीव्र वेग से चलता हुआ जल विनाशकारी सिद्ध हो सकता है, इसी प्रकार राजयोग के यथार्थ बांध के बिना, युवक के संकल्प विध्वंस कार्य की ओर प्रवृत हो रहे हैं। राजयोग बांध द्वारा युवक अपने श्रेष्ठ सकंल्पों से विश्व का फिर से नव निर्माण कर सकता है।

सचित्र समाचार

मेजर जनरल एल.एस. रावत ने आबू में राजयोग शिविर में भाग लिया। वे परिवार सहित ब्र.कु.ई. विश्वविद्यालय के मुख्यालय, पाण्डव भवन आबू पर्वत में मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि, राजयोग शिक्षकों तथा अन्य मधुबन निवासियों के साथ दिखाई दे रहे हैं।

भ्राता दिग विजय सिंह जी, उपमन्त्री वातावरण (Environment), भारत सरकार, के ओम शन्ति भवन, आबू पर्वत पर पधारने पर ब्र.कु. आरती (इन्दौर) उन्हें आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए। साथ में महाराजकुमार सिरोही, ब्र.कु. मोहन, ओमप्रकाश जी, मृत्युन्ज्य तथा अन्य।

कीन्या में कामनवेल्थ पार्लियामेन्ट्री एसोसीएशन के सम्मेलन में डा. बलराम जाखर, अध्यक्ष लोकसभा को 'पीस चार्टर' की प्रति भेंट करती हुई ब्र.कु, रेखाजी

बम्बई से बर्मा शैल के जैनरल मैनेजर के पाण्डव भवन आबू पर्वत, पर पधारने पर ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी ने उन्हें अध्यात्मिक डायरी ईवश्रीय सौगात में दी। डायरी में अपने प्रति शिक्षाओं को पढ़ हर्षित मुद्रा में।

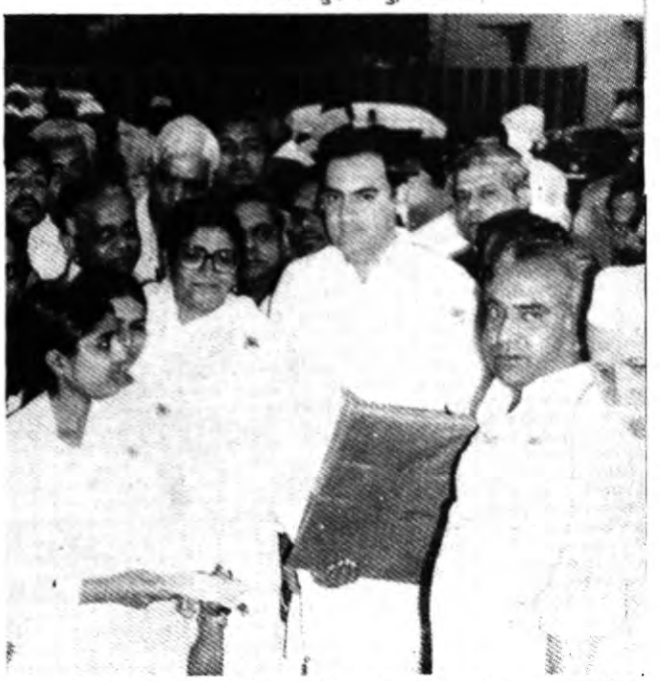

अजमेर में भ्राता राजीव गांधी, सदस्य लोकसभा तथा महासचिव कांग्रेस (इ) को ब्र.कु. राधा तथा अनुराधा उन्हें श्रीकृष्ण का सुन्दर चित्र भेंट करते हुए।

आध्यात्मिक सेवा समाचार (चित्रों में)

लन्दन में रानी एलीज़िबिथ का अभिनन्दन करते हुए वहां के ब्र.कु. बहन भाई।

बोगोटा विश्व विद्यालय (कोलम्बया) में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम में भारत के राजदूत भ्राता ए. डब्लयु. बी. वाज़ सम्बोधित करते हुए। उनके दाएं ब्र.कु. जगदीश चन्द्र, मुख्य सम्पादक, ज्ञानामृत, वर्ल्ड रीन्युवल तथा प्युरिटी विराजमान है

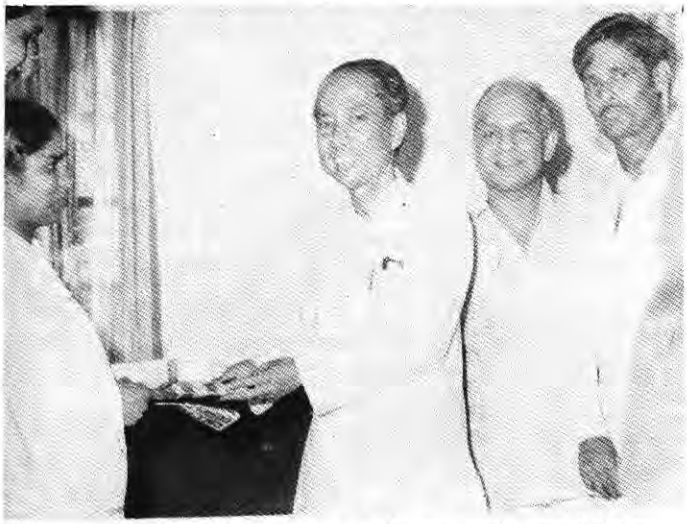

ब्र.कु. रजनी डिब्रूगढ़ में असम के मुख्य मन्त्री भ्राता हितेश्वर सेकिया को आध्यत्मिक साहित्य भेंट करते हुए।

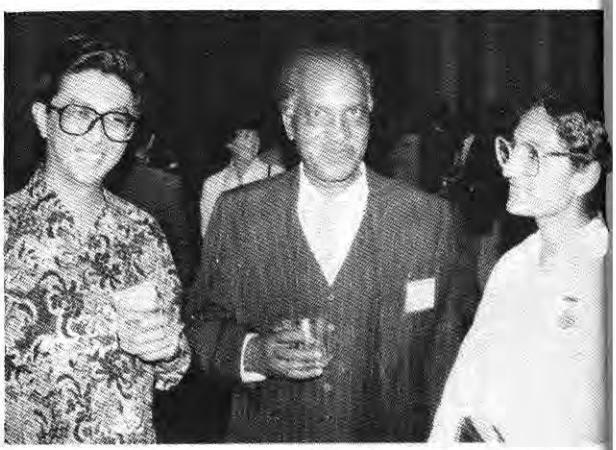

कीन्या में हुए राष्ट्रमण्डल के संसदीय सम्मेलन के अवसर पर ब्र.कु. रेखा कीन्या के वाटर डीवल्पमेन्ट मन्त्री तथा मलेशिया से डा. ओगंहीन टी को ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् खड़े हैं।

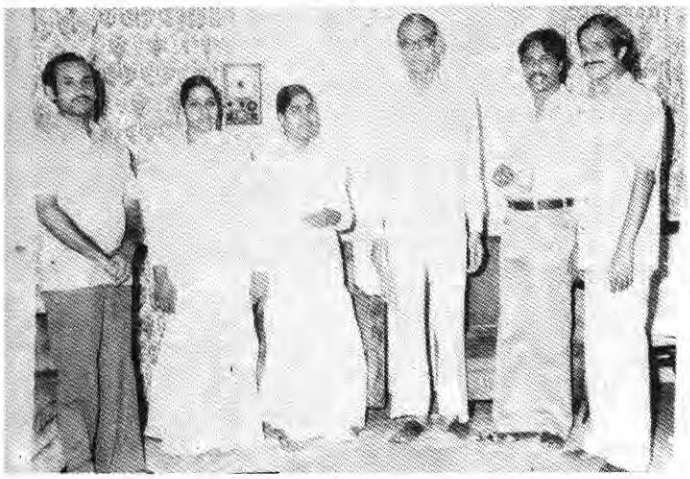

डिब्रूगढ़ में केन्द्रीय मन्त्री भ्राता बहरुल इस्लाम तथा भ्राता जयचन्द्र नागवंशी (असम लघु उद्योग के अध्यक्ष) को ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् ब्र.कु. रजनी, पार्वती, भ्राता शम्भूप्रसाद तथा अन्य खड़े हैं।

पोरबंदर रोटरी क्लब में अपने दिव्य जीवन का अनुभव सुनाते हुए भूतपूर्व बागी ब्र.कु. पंचम सिहं जी।

इन्डोनेशिया में ब्र.कु. मनोहर इन्द्रा जी, वहां के हिन्दु धर्म परिषद के अध्यक्ष भ्राता केप्टो सुनोटो को आदि सनातन देवी देवता धर्म के रहस्यों की जानकारी देते हुए।

कुल्लू में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल जी।

गाम देवी–बम्बई में हुए आध्यात्मिक समारोह में मंच पर (बाएं से) ब्र.कु. रमेशजी, भ्राता जी.एल. वधवाजी, भ्राता डोरोफ़ीन, रुस के वाइस कौन्सल, ब्र. कु. हृदयमोहिनी जी तथा महाराष्ट्र के लोकायुक्त भ्राता एन.डी. कामत

नेरोबी (कीन्या) में ब्र.कु., रेखा इन्द्रा तथा दिप्ती भ्राता ठाकुरसेन नेगी, अध्यक्ष हिमाचल प्रदेश विधान सभा, को ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

केरला में तिरूवनन्तपुरम में आध्यात्मिक समारोह में प्रवचन करती हुई ब्र.कु. शिवकन्या जी। उनके बाएं भ्राता वी.के. सुकमारन नायर, पूर्व उप-कुलपति केरल विश्वविद्यालय विराजमान हैं।

मनीनगर–अहमदाबाद सेवा केन्द्र द्वारा धालका नगर में आध्यात्मिक समारोह में प्रवचन करते हुए भ्राता मुकु भाई शेठ। ब्र.कु. शारदा उनके बाएं बैठी हैं।

बारबेडोज़ में एन.जी.ओ./डी.पी.आई. की प्रमुख, बहन शैली स्विंग शैली आध्यात्मिक प्रदर्शनी का टेप काट कर उद्घाटन करते हुए।

बम्बई में गुजराती फ़िल्म के कलाकार भ्राता उपेन्द्र त्रिवेदी वेलजी गजर, लोकगीत गायक, बाकू भाई मेघजी, विधायक गुजरात, नरोत्तम सोमैया, तथा अन्य ईश्वरीय सौगात लेने के पश्चात् ब्र.कु. नलिनी बहन के साथ दिखाई दे रहे है।

मलाई मन्दिर–रामाकृष्णापुरम में हुए विश्व नव निर्माण आध्यामिक मेले का अवलोकन करने के पश्चात् (बाएं से) भ्राता स्टीव नारायण, राजदूत ग्याना, भ्राता रमेश भण्डारी, सचिव विदेश मन्त्रांलय, श्रीमति नारायन तथा ब्र. कु. शान्ति जी।

कलकत्ता में दुर्गा पूजा के अवसर पर ब्र.कु. दादी निर्मल शान्ताजी तथा महानिर्वाण मठ के अध्यक्ष महाराज विशुद्धानन्द जी व अन्य सन्यासी, दीपक जलाकर प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

न्यूजीलेन्ड में भारत के राजदूत को भ्राता निवैर जी आबू में ८४ में होने वाले विश्व शान्त सम्मेलन का निमन्त्रण देते हुए। ब्र.कु. भावना, मनी भाई तथा पीटर साथ में हैं।

बरनाला में हुए अध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधन करते हुए ब्र.कु. लेखराजजी बम्बई से डा. गरीश पटेल तथा ब्र.कु. दिव्य प्रभा मंच पर बैठे हैं।

युवा परिवर्तन से विश्व परिवर्तन

वास्तव में हर वर्ग जैसे कि इंजीनियर, डाक्टर, वकील, मजदूर, किसान या विद्यार्थी वर्ग में युवा शक्ति का ही अत्याधिक महत्व है। अगर इन वर्गों के युवक केवल 6 बातों में अपना परिवर्तन कर लें तो विश्व परिवर्तन में कोई देरी नहीं लगेगी। युवक मन में शुद्ध सकल्प करें, मुख से मधुर वचन बोलें, नयनों में आत्मिक तथा भ्रातृत्व भाव की दृष्टि रखें, शुद्ध आहार स्वीकार कर आध्यात्मिक विहार करें तथा सेवा भावना रख कर व्यवहार करें। इन 6 **बातों का स्वयं में परिवर्तन करने से आज का युवक कल के युवक को भी नया मोड़ दे सकता है। अर्थात् एक नये युग की ओर अग्रसर कर सकता है। इस प्रकार युवा परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न हो सकता है।**

युवा शक्ति—एक दिव्य शक्ति

आज के युवकों के दूषित विचारों व विकारों के परिणाम स्वरूप विश्व का पतन होता जा रहा है। लेकिन राजयोग के द्वारा युवक अपने सकंल्पों का दिव्यीकरण कर दिव्य शक्ति का संचय कर सकता है। अगर वह काम वासना को जीत कर पवित्रता के कमल-आसन पर बैठ जाए, क्रोध अग्नि को जीत कर शान्ति प्रिय बन जाए, लोभ को निकाल कर सन्तुष्ट आत्मा का अनुभव करे, मोह से मुक्त होकर न्यारा और साक्षी दृष्टा बन जाए, अंहकार और ईर्ष्या को खत्म कर नम्रता और प्रेम भरा व्यवहार करे तो वह विश्व को नई रूप रेखा देकर विश्व कल्याण के निमित्त बन सकता है। अब परमात्मा शिव, युवकों को सन्देश दे रहे हैं कि, "हे युवको, अपने मनो-विकारों को ईश्वरीय ज्ञान यज्ञ में स्वाह करके बनो महान, करो कल्याण।"

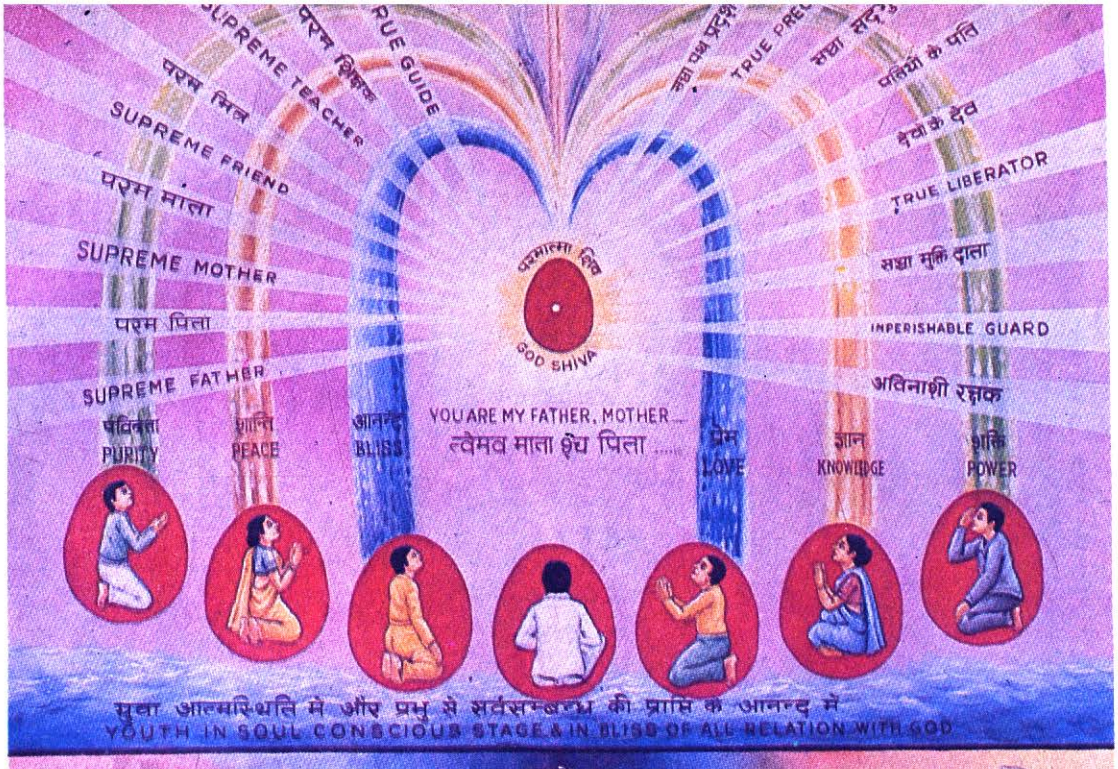

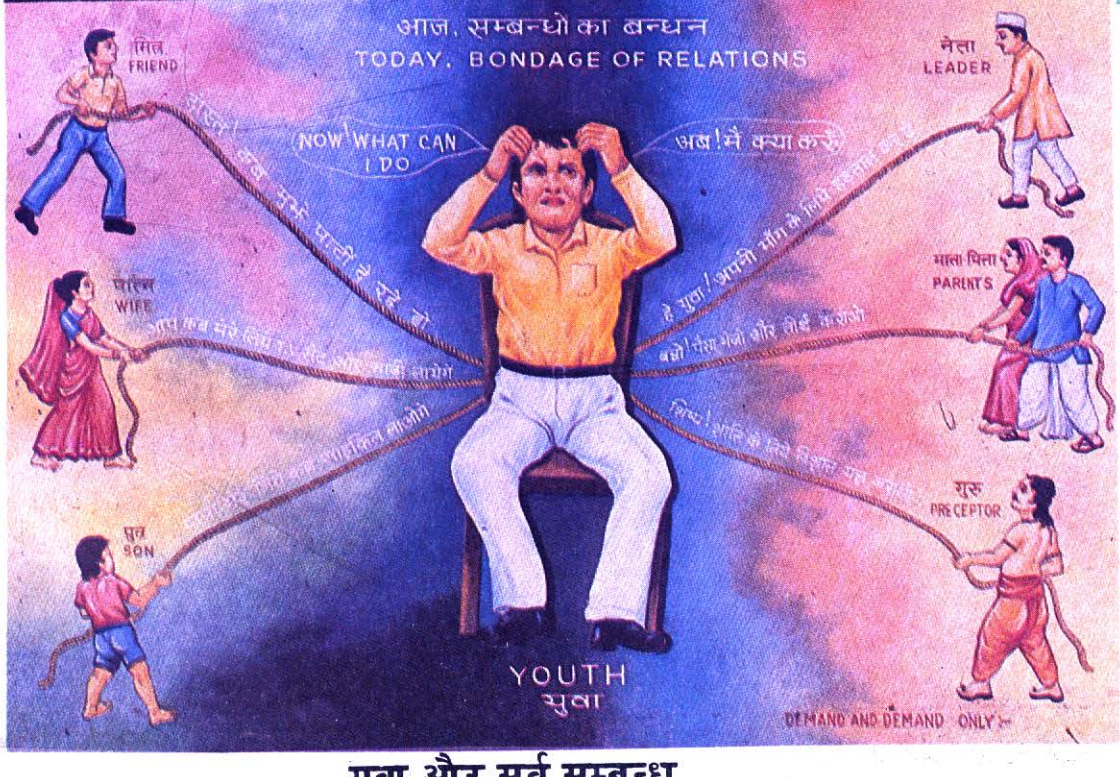

युवा और सर्व सम्बन्ध

आज का युवक चारों ओर से कई सम्बन्धों के बन्धनों में बंध चुका है। मित्र, मित्रता का बन्धन, स्त्री अपनी आवश्यकताओं का बन्धन, मात-पिता अपने मात-पितृ ऋण से मुक्त कराने का बन्धन, नेता अपनी मांग के लिए हड़ताल का बन्धन डाले, उसके पीछे पड़े रहते हैं। ऐसी हालत में युवक क्या करे और किस ओर जाए वह किंकर्तव्य विमूढ़ स्थिति में विवश होकर बेचैन है। अब युवकों के प्रति इस प्रकार के बन्धनों से छूटने के लिए ईश्वरीय सन्देश है, "हे युवको, आत्मिक स्थिति में रहकर अपने सर्व सम्बन्ध एक परमपिता परमात्मा शिव से जोड़ो और सर्व आत्माओं से स्नेह-युक्त व्यवहार करो। तुम्हें ईश्वरीय ज्ञान, पवित्रता, सुख-शान्ति, प्रेम आनंद और शक्ति का अनुभव होगा और तुम सर्व बन्धनों से छूट जायेंगे।"

युवा और सच्चा पथ-प्रदर्शक

युवक जब जीवन-राह पर चलता है तो हर मोड़ पर उसके भटक जाने का डर रहता है। कभी मान-अभिमान का मोड़, तो कभी धन संग्रह के सकल्पों का मोड़, कभी ऐश-आराम से जीवन बिताने के विचारों का मोड़ तो कभी रंग-रूप का मोड़, तो कभी जाति-भेद, धर्म भेद, भाषा भेद, प्रान्त भेद, देश-भेद, आदि राहों में भी वह भटक सकता है। लेकिन इसी युवाकाल में अगर युवक परमात्मा को सच्चा पथ-प्रदर्शक बनाकर सहज ज्ञान और सहजयोग के सन्मार्ग पर चलकर दिव्य गुणों को धारण करे तो निश्चित ही वह अपनी जीवन को नया मोड़ देकर विश्व का नव निर्माण कर सकता है।

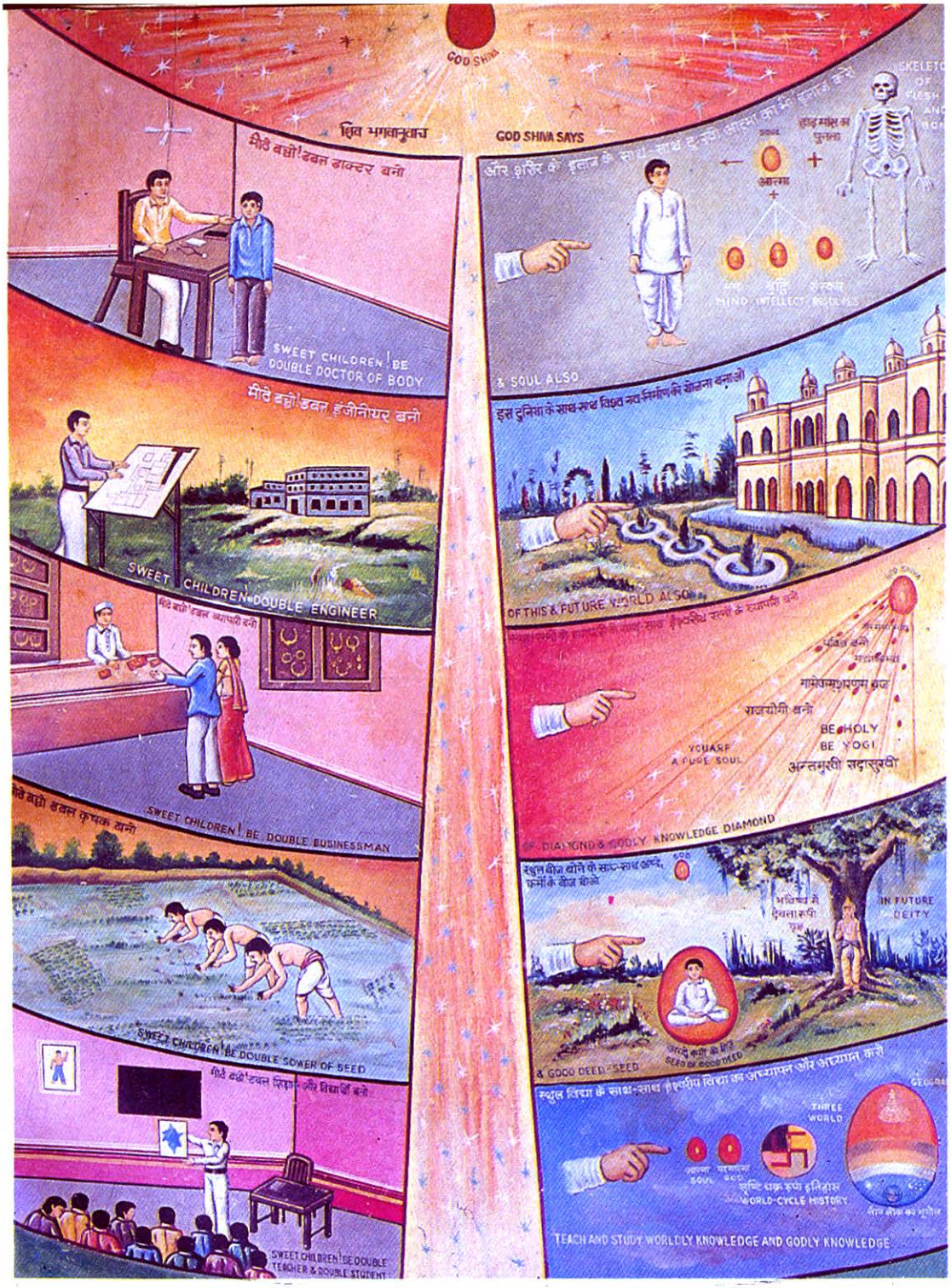

युवा के विभिन्न वर्गों के प्रति ईश्वरीय सन्देश

अब युवकों के लिए ईश्वरीय सन्देश है, "कि हे युवको, आध्यात्मिकता के लिए भौतिकता को छोड़ नहीं बल्कि भौतिकता के साथ-साथ विभिन्न वर्गों में आध्यात्मिकता का भी समावेश करें।" यदि युवक डाक्टर हैं तो डबल डाक्टर बनें अर्थात् वह तन के साथ-साथ मन का भी इलाज करें। यदि वह इन्जीनियर हैं तो पुरानी दुनिया के साथ-साथ नई दुनिया की भी योजना बनाएं। अगर वह व्यापारी है तो वह ज्ञान रत्नों का भी व्यापार करे। युवा किसान अपने भविष्य के लिए श्रेष्ठ कर्मों का भी बीज बोये। अगर वह विद्यार्थी है तो भौतिक विद्या के साथ राजयोग की विद्या भी ग्रहण करे तो वह विद्या भौतिक विद्या में भी एकाग्रता लायेगी। इसलिए कुछ भी छोड़ने की बात नहीं बल्कि जोड़ने की बात है।

लन्दन में ब्र.कु. जगदीश जी, दादी जानकी जी तथा ब्र.कु. सुदेश जी भूतपूर्व आर्चबिशप कैन्टबरी आदरणीय लार्ड कोगन को ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् उन के साथ खड़े हैं।

लास एन्जेलस (अमेरिका) में ब्र.कु. चिड़िया भ्राता जोहन फारस प्रसिद्ध टैलिविजन स्टार को यूनिवर्सल पीस चार्टर भेंट करते हुए

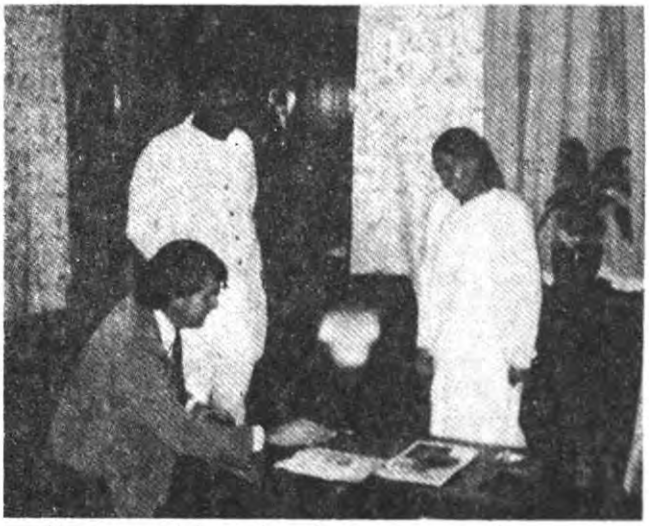

लन्दन में ब्र.कु. राजयोगी जगदीश जी तथा ब्र.कु. जयन्ती बहन भ्राता हग क्राफट, सचिव कामनवेल्थ कान्फ्रैन्स, देहली से मिलते हुए।

मधुबनी में प्रदर्शनी का उद्घाटन ज़िलाधिकारी करते हुए। साथ ब्र.कु. रानी तथा अन्य भाई बहन खड़े हैं।

लन्दन में हुई कान्फ्रैन्स में वर्कशाप "इन्नर डामैन्शन आफ पीस" का एक दृश्य।

क्या मनुष्य को अपने भोजन के लिए हिंसा का अधिकार है ?

(अनुवाद—ब्र०कु० सुरेश, लक्ष्मीनगर, दिल्ली)

प्रश्न—बहुत से पशु बहुत ही तीव्रगति से वृद्धि को पाते हैं, अगर मनुष्य उनमें से कुछ को न खाए तो एक दिन सारा विश्व बकरों, मुर्गियों तथा दूसरे जानवरों से भरा होगा, मनुष्य उनकी बढ़ोत्तरी को रोकने के लिए मारने के अलावा क्या कर सकता है ?

उत्तर—यह एक व्यर्थ की चिन्ता का दिखावा मात्र है। पशु जाति को दो भागों में बांटा जा सकता है – उनमें एक हैं पालतू पशु पक्षी या घरेलू जानवर और दूसरे वे हैं जो जंगल में आज़ादी से रह रहे हैं जैसे शेर, चीते इत्यादि। विश्व में काफी जंगल हैं जिसमें काफी मात्रा में पशु रह सकते हैं। इसलिए हमें उनमें विघ्न नहीं डालना चाहिए। क्योंकि उन्हें भी मनुष्यों की तरह आज़ादी से रहने का अधिकार है। हमें उन्हें आत्म-रक्षा या बच्चों के बचाव के सिवाय नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए। यह स्पष्ट है कि आत्म-रक्षा में किसी का वध करना अपराध नहीं है।

जहाँ तक पालतू पशुओं का सवाल है वे अब हमारे समाज का एक अंग बन गए हैं। वे मनुष्य जाति की काफी सेवा करते हैं। गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा इत्यादि मनुष्य के परिवार के एक सदस्य के रूप में हो गए हैं। इसलिए पहले उनकी पीठ पर थपथपाना, उन्हें पालना और फिर उनका वध करना एक निर्दयता और धोखा है। जो कल तक मनुष्य के बच्चों के साथ खेलते-कूदते थे, उनके आंगन या खेत में रहते थे, वे बूचड़खाना भेजे गए और फिर काटकर उबाल कर, तलकर, पकाकर उन्हें तशतरियों में परोसा जाता है। यह वास्तव में सभ्यता और संस्कृति के लिए शर्मनाक है जो हमें इस प्रकार के विलासी कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। इतना गंदा व्यवहार तो जानवर भी नहीं करते। इतना विश्वास-घाती तो वो भी नहीं होते। यह अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि जब से मानव ने मांस और खून को चखा है, प्रकृति उसके विरुद्ध हो गई है और यह मनुष्य जाति के लिए एक अभिशाप सिद्ध हुआ है, यह मनुष्य की अपनी ही निर्दयता का कारण है जो आज एक मनुष्य की प्रकृति दूसरे मनुष्य के प्रति या एक देश दूसरे देश के प्रति खून खराबा और बड़ी संख्या में कत्लेआम के लिए तैयार है।

अब प्रश्न यह है कि मनुष्य जानवरों की संख्या कम करने के लिए कसाई के खूनी कार्य से मनुष्य जाति को क्यों बदनाम करे, उसको यह जिम्मेदारी किसने दी है ? यह प्रकृति में एक व्यर्थ का दखल है जिसमें अपनी समता रखने की शक्ति है। यह अधिकार मनुष्य जाति को किसने दिया है कि वह दूसरों की अपने भोजन के लिए हत्या करे ? यह एक नियम है कि जिसे कोई पैदा नहीं कर सकता, उसे मारने का भी अधिकार नहीं है। मनुष्य का सिद्धान्त होना चाहिए कि "जियो और जीने दो"। पहले किसी पशु को पालना, खिलाना और प्यार करना और फिर उसे कसाई को दे देना, एक विश्वासघात, निर्दयता और क्रूरता का कार्य है।

क्या मृत्यु के नजारे से हमारी रीढ़ की हड्डी में कंपकपी नहीं होती ? क्या इससे हमारी हमदर्दी को धक्का नही लगता। अगर ऐसा होता है तो फिर मनुष्य मांस का आनन्द क्यों लेता है। अगर ऐसा नहीं होता है तो फिर इसका मतलब है कि ऐसे नज़ारों ने मनुष्य की स्वाभाविक वृति (Natural Impulse) को जानवरों के प्रति कठोर बना दिया है। यह एक मानसिक तथ्य है जिससे एक की भावना दूसरे के प्रति मर जाती है। क्या पुरुष या स्त्री अपने बच्चे की हत्या देखना सहन कर सकता है ? यह सच-मुच भयानक और अविचारणीय बात है। फिर

मनुष्य इन छोटे पशुओं या प्राणियों के प्रति इतना निर्दयी क्यों है? जिन्हें कल तक अपना समझकर पाला और प्यार किया गया था और जिन्होंने इसका उत्तर बहुत ही प्यार से दिया, जो दिली प्यार से हमारी आँखों में झाँकते थे, अपने प्यार को दिखाने के लिए अपने कान या पूंछ को हिलाते थे या हमें देख कर खुशी से कूदने लगते थे आज हम उन्हें खाएं यह एक असभ्य और अमानवीय कार्य है।

प्रश्न : विकास का सिद्धान्त कहता है कि मनुष्य ने अपना जीवन एक शिकारी की तरह शुरू किया। इसलिए क्या उसका पशुओं पर रहना पुरखा अधिकार (Birth Right) नहीं है?

उत्तर : यह बिल्कुल गलत धारणा है कि मनुष्य शुरू में शिकारी था, मनुष्य को परमात्मा ने अपने जैसा बनाया। और मौलिक रूप से वह दिव्य, दयालु, कृपालु और प्यारा है। जब मनुष्य अपने देह अभिमान में आ गया और ईर्ष्या, स्पर्धा, घृणा, उत्पात और गुलामी करने लगा और उसकी दूसरी इन्द्रियों ने भी उस पर काबू पा लिया, जिससे उसने दूसरों का शोषण अत्याचार और हत्या शुरू कर दी। नतीजा यह हुआ कि मनुष्य और पशु के बीच एक भय पैदा हो गया। जिससे कुछ जानवर शिकारी बन गए और मनुष्यों ने भी शिकारी जानवरों की नकल शुरू कर दी। मूल रूप से मनुष्य पशुओं का खाने वाला नहीं बल्कि उनका मित्र था, वह अपने आनन्द के लिए पशुओं का शिकार नहीं करता था। बल्कि वह हिरण, शेर और दूसरे पक्षियों के साथ खुशी से खेलता था। वह समय था जब मनुष्य वास्तविक रूप से सभ्य था।

अगर मनुष्य वास्तविक रूप से शिकारी व मांस खाने वाला था फिर लाखों पुरुष व स्त्रियों का पशुओं के वध करने से जी क्यों मिचलाता है? जब वह पकाया या खाया जाता है तो उसके माँस से बदबू क्यों आती है?

फिर जहाँ बकरे का माँस या मुर्गी का मांस लटका हुआ या खाया जा रहा है तो लोग उससे दूर जाना क्यों पसन्द करते हैं? क्या मनुष्य फलों और सब्जियों को देखकर भी नफ़रत करता या नाक सिकौड़ता है? दूसरी ओर बहुत से लोग किसी भी जानवर की टांग (legs), जीभ (tongue) या शरीर के दूसरे हिस्से की परोसी हुई तरकारी को देखकर घृणा करते हैं और बेहोश हो जाते हैं। केले या संतरे का छीलना, सेब का काटना या आलू का उबालना मन में ऐसी भावना उत्पन्न नहीं करता जैसा कि किसी जानवर या पक्षी के गला या पैर काटने या उसके माँस को उबालने, भूनने या तलने से होती है। इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य मूल रूप से माँसाहारी नहीं था, फिर अगर मनुष्य शुरू से शिकारी था तो मनुष्य मांस को बिना उबाले, तले और नमक मिलाने के वैसी ही अवस्था में क्यों नही खाता? इससे पता चलता है कि उसको यह आदत जानवरों से पड़ी है और उसे पकाकर स्वादिष्ट बनाना यह आदत उसने मनुष्यों को मिला दी है।

मान लो अगर तर्क-वितर्क (Argument) के लिए यह मान लिया जाय कि मनुष्य शुरू से शिकारी था तो हमें यह याद रखना चाहिए कि हम ऐसे मनुष्यों के बारे में बात कर रहे हैं जो अपने आपको सभ्य और उन्नत समझते हैं, और जिसमें सोचने समझने व तर्क करने की क्षमता है। आज का मनुष्य शहरों में रहने वाला है न कि गुफाओं में। फिर किसी मूर्ख और असभ्य का उदाहरण क्यों दें? क्या हमें शिकारी, जल्लाद, कसाई, कातिल, मारने वाला और निर्दयी व्यक्तियों का अनुकरण (follow) करना चाहिए। फिर हमारे पास नागरिक शास्त्र (civics) आचार नीति (ethics) नियम और ज्ञान की ऐसी शाखाएं क्यों हैं?

आधुनिक जीव-विज्ञान (Modern Biology Sciences) भी यह कहता है कि मनुष्य की शारीरिक रचना इस प्रकार की है जिससे वह प्राकृतिक रूप से शाकाहारी और फलहारी है, मनुष्य के दांतों में वह नोकीलापन भी नहीं है जो कि मांसाहारी पशुओं में पाया जाता है, इसके अतिरिक्त माँसाहारी जानवरों की भोजन प्रणाली या आँतें मनुष्यों की अपेक्षा छोटी होती हैं जिससे मल त्यागने में लम्बा समय न लगे और सड़न न हो। इसके अतिरिक्त मनुष्य के लार का असर क्षारयुक्त होता है जबकि मांस खाने वाले या शिकारी जानवरों की लार में खट्टापन होता है, इस लिए क्षारयुक्त लार मांस पर सही असर नहीं डालती क्योंकि इसमें खट्टापन काफी मात्रा में बनता है। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य में प्राकृतिक दृष्टि से मांसा-

हारी होने के लिए शारीरिक अनुरूपता नहीं है। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि मनुष्य मूलरूप से शिकारी या मांस खाने वाला है। क्या मनुष्य के ऐसे पन्जे (claws) नाखूनी और नौकीले दाँत हैं जिससे उसे शिकारी मांसाहारी कहा जा सके? अगर यह कहा जाय कि मनुष्य जानवरों को पत्थर और गदा (clubs) से मारा करता था या बाद में उसने पत्थर के हथियार खोज लिये थे। तब इसका मतलब यह है कि इनको खोजने से पहले वह एक शाकाहारी या फलहारी होगा। फिर मनुष्य फल क्यों नहीं खाता जबकि पेड़ इन्हें काफी मात्रा में उगाते हैं और ये ज्यादा स्वादिष्ट हैं।

इसके अलावा यह भी स्पष्ट रीति से जानना आवश्यक है कि माँस खाना दूसरे बहुत से कारणों से भी नुकसानदायक है। इनमें से एक कारण यह है कि जानवर बूचड़खाने में कसाई के द्वारा अपनी मौत को आता देखकर घबरा जाते हैं। डर से जैसा कि पता है कुछ मल बाहर निकल जाता है (Secretions) जो जब खून में जाता है तो जहरीला और नुकसानदायक बन जाता है। सानफ्रासिस्को (अमेरिका) और कहीं और भी हुई खोजों से यह पता चलता है कि बहुत से लोगों की मृत्यु जोकि मीट खाने के पश्चात भयंकर रूप से बीमार हो गये थे, उसका अधिकतर कारण जानवर की बीमारी था जो कि मरने के डर से हो गयी थी। जानवर, हत्या से पहले स्वस्थ्य और ताकतवर था, वह एक घन्टे से ज्यादा आत्मरक्षा के लिए लड़ता रहा लेकिन जैसे ही उसका पुरुषार्थ बेकार होता जा रहा था उतना ही उसका डर से आवेश (frienzied) बढ़ता जा रहा था। उसने काफी संघर्ष किया जिससे वह गुस्से में आ गया, उसकी आंखें लाल सुर्ख हो गयीं और मुंह से झाग आने लगी। चिकित्सकों की खोज के अनुसार उसके डर और गुस्से ने उसके माँस को जहरीला बना दिया। साँड का माँस भी जो कि लड़ाई के अखाड़े में मारा जाता है, काफी जहरीला बन जाता है या खरगोश का माँस भी जो कि शिकारी कुत्तों (Hounds) के पीछा करने के पश्चात मारे जाने से जहरीला बन जाता है।

इसके अतिरिक्त यह भी याद रखना चाहिए कि जहां फल और सब्जियाँ आहिस्ते-आहिस्ते सड़ती हैं, माँस काफी तीव्रगति से सड़ता है, जैसे ही जानवर की मृत्यु होती है उसका सड़ना शुरू हो जाता है। जानवर का मृतक शरीर एक मुर्दे की तरह सड़ता है इसलिए माँस खाना किसी मुर्दे को खाना है। सच्चाई यह है कि जानवर का माँस तत्काल (immediatly) सड़ना शुरू हो जाता है, यह निरीक्षण (observation) से भी प्रमाणित (corroborated) किया जा चुका है कि माँसाहारी पशुओं का चेहरा आक्रमणकारी होता है जबकि शाकाहारी पशु का चेहरा शाँत (inoffensive) और निर्अपराध होता है। इसलिए अगर माँस खाने की परम्परा है भी तो इसका गलत रिवाज होने के कारण विरोध करना चाहिए। दासता (slavery) और बन्धुआ मजदूर (Bonded labour) इत्यादि की परम्परा बहुत से देशों में रही है क्या आज का मानव इन परम्पराओं को छोड़ता नहीं जा रहा है?

प्रश्न—कर्म-दर्शन (Philosphy of Karma) कहता है कि हर जीव सुख-दुख अपने कर्मों के अनुसार पाता है, इसलिये हम भी क्यों नहीं सोचें कि बकरा, मुर्गी इत्यादि को कसाई की दुकान पर दुख मिलता है या दूसरे पशु भी कसाई की दुकान में अपने कर्मोनुसार फल भोगते हैं? उनके शरीर का अन्त वध के द्वारा इसलिये होता है क्योंकि यह उनके कर्मों का हिसाब किताब है। और जब उनका वध होता है तो इसमें मनुष्य की गलती ही क्या है जो बेकार जाने से वह उसके माँस को भोजन के लिये इस्तेमाल कर ले?

उत्तर—यह वास्तव में एक विचित्र तर्क है जो कि गलत धारणाओं पर आधारित है जैसा कि शेक्सपीयर ने कहा है कि शैतान भी धर्म पुस्तक का आधार अपने लिये ही लेता है।

जब एक आदमी दूसरे आदमी को कतल करता है। तब हम भी ऐसा ही क्यों नहीं कहते कि यह उसके कर्मों का हिसाब-किताब ही कुछ ऐसा था। जिससे उस के शरीर का अन्त इसी प्रकार से हुआ। फिर अदालत भी उसे इस आधार पर आज़ाद क्यों नहीं कर देती कि यह तो दूसरों के कर्मों के हिसाब को पूरा करने में केवल निमित मात्र था। फिर कोई व्यक्ति अपने पुत्र को तेज रफ्तार से जाते हुए ट्रक के नीचे क्यों नहीं आने देता या किसी मित्र का कतल गला घुटवाकर क्यों नहीं करवा देता, यह समझते हुए कि यह तो उसके कर्मों का फल था। मनुष्य को यह समझ लेना चाहिये कि हत्यारे की मृत्यु अपने कर्मों की वजह से

(शेष पृष्ठ १० पर)

आध्यात्मिक सेवा समाचार

बिलास पुर (म०प्र०) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां की "बाल-अपराधी जेल" में बाल कैदियों के सन्मुख आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्मक्रम आयोजित किया गया। चांपा नगर में चार दिवसीय सुख-शांति प्रदायक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

खाडिया (अहमदाबाद) सेवा केन्द्र की ओर से एक गरबी के प्रोग्राम में 5 दिन तक आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम तथा चतन्य देवियों की झांकी सजाई गई। खोखरा मेहमदाबाद विस्तार में एक स्कूल में सहज राजयोग प्रर्दशनी तथा चैतन्य देवियों की झांकी का भी आयोजन किया गया कालूपुर में एक स्थान पर प्रोजैक्टर शो द्वारा संदेश दिया गया।

ब्यावर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त प्राप्त हुआ है कि वहाँ पर राजीव गांधी जी के आगमन पर बहुत बड़ा गेट बनाया गया तथा गुलदस्ता भेंट किया गया। श्रीकृष्ण का चित्र व साहित्य उपहार के रूप में दिया गया। उनके साथ में अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों की भी सर्विस हुई।

दादरी सेवा केन्द्र की ओर से दीपावली के अवसर पर महालक्ष्मी की चैतन्य झांकी सजाई गई तथा प्रवचनों द्वारा बाप का परिचय दिया गया।

पहाड़गंज (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से तीन विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिससे उस इलाके में आध्यात्मिक लहर सी फैल गई है। काफी साहित्य भी बिक्री हुआ।

नारायणगढ़ (नेपाल) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वीरगंज जेल के सुपरीटेंडेंट के निमंत्रण पर तराई विभाग की सबसे बड़ी जेल में लगभग 700 कैदियों के समक्ष प्रवचन किया गया और दो बार राजयोग फिलम दिखाई गई। जेल की लायब्रेरी में प्रदर्शनी के कुछ चित्र भी लगाए गए तथा नेपाली का लिट्रेचर भी पढ़ने के लिए रखा गया।

कलकत्ता सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि महानिर्वाण मठ, बेहला, कोन नगर, श्याम नगर खिदिरपुर तथा रायबागान में आध्यत्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविरों का आयोजन किया गया। जिनसे लाखों आत्माओं को शिव पिता का संदेश मिला।

कोचीन से समाचार प्राप्त हुआ है कि रविपुरम पौरस हाल में तीन दिन का राजयोग शिविर आयोजित किया गया जिसमें कोचीन राजा परिवार के मुख्य अंग केरल वर्मा तम्पुरान अपने पत्नि सहित शामिल हुए।

बरेली सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहाँ के मिलिट्री युनिट के दो मंदिरों में प्रवचन एवं प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

जीन्द सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहाँ पर डाक्टर वर्ग का स्नेह मिलन रखा गया, जिसमें मुख्य विषय था—मैडिटेशन एज मैडिटेशन। मुख्य अतिथि भ्राता रमेश कुमार जी ने कहा कि आज के भौतिक युग में मनुष्यों की मानसिक परेशानियां बहुत हैं जिनको दूर करने के लिए राजयोग अति आवश्यक है।

अबोहर सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि सिन्धु नगर में चार दिन के लिए मिनी मेला लगाया गया। लगभग 120 आत्माओं ने योग शिविर तथा ज्ञान शिविर से लाभ लिया।

बीकानेर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि स्थानीय डागों के मैदान में नवरात्रों के पर्व पर 8 दिन के लिए नौ चैतन्य देवियों की झांकी तथा मानव दिव्यीकरण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। बीकानेर के इतिहास में यह प्रथम कार्यक्रम था जिसको सभी ने काफी सराहा जिसका समाचार स्थानीय समाचार पत्रों में छपा।

आनंद सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि लांभवेल गांव में मृत्यु प्रसंग पर प्रवचन तथा सप्ताह कोर्स का कार्य क्रम रखा गया जिससे लगभग 500 आत्माओं को शिवपिता का दिव्य संदेश मिला। इसके अतिरिक्त गाना, रावणपरा, भूमेल, खंभोणज, वांसखीलिया, लींगडा आदि गांवों में भी प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

नडियाड सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि देवा, पलाणा, भड़कद, राघणज, वसो, कठलाल, रंगापुरा आदि गांवों में प्रवचन तथा देवियों की झांकी आदि के कार्यक्रम रखे गए जिनके द्वारा अनेकानेक आत्माएं लाभान्वित हुई। नडियाड के एक खुले थियेटर में पंचमसिंह जी के पहुंचने पर प्रवचन कार्यक्रम भी रखा गया।

लाजपत नगर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि

दशहरे के शुभ अवसर पर हर वर्ष निकाले जाने वाले सार्वजनिक जलूस में सेवा केन्द्र की ओर से बहुत ही आकर्षक झांकी निकाली गई। इस अद्भुत झांकी को पहली बार देख कर सनातन धर्म मंदिर वालों ने बहुत सराहना की।

जामनगर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां पर पंचमसिंह के पहुंचने पर वहां की स्थानीय जेल में लगभग 150 कैदियों के समक्ष प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पंचमसिंह ने अपना व्यक्तिगत अनुभव सुनाया जिसे सुनकर वहां के मामलतदार तथा सभी कैदी बहुत प्रभावित हुए। और सायं के समय प्रैस संवाददाताओं के साथ इंटरव्यू हुआ तथा पब्लिक प्रोग्राम भी रखा गया।

हैदरावाद सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां के स्थानीय प्रदर्शनी के मैदान में एक सप्ताह के लिए विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे लगभग 5000 आत्माओं को दिव्य संदेश मिला।

सोलापुर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि महाराष्ट्र के महान् तीर्थ स्थान पंठर पुर क्षेत्र में देवियों का सप्ताह मनाया गया। चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा नौ चैतन्य देवियों की झांकी सजाई गई। जिससे लगभग 50000 आत्माओं को संदेश मिला।

गौहाटी सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि पुलिस रिजर्व के कम्पाउंड में जहाँ, देवियों का बहुत बड़ा पंडाल लगता है, आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। शिलांग में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई।

वारंगल सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि उपसेवा केन्द्र जनगाँव की ओर से चेरयाला शहर में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। चिराला गीता पाठशाला के वार्षिक उत्सव पर राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। "पंदीला पल्ली" गांव में भी प्रदर्शनी लगाई गई।

मुलुन्द (बम्बई) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि थाना में मानव सुख-शान्ति आध्यात्मिक मेले" का आयोजन किया गया। शहर में से शोभा यात्रा निकाली गई। मेले के अंतर्गत महिला सम्मेलन तथा व्यापारियों का सम्मेलन बुलाया गया। समाप्ति समारोह में "स्वर्ग में एक सीट खाली है" नामक नाटक दिखाया गया। लगभग एक लाख आत्माओं ने मेले से लाभ उठाया तथा 800 आत्माओं ने राजयोग शिविर से लाभ लिया।

फिरोजाबाद सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि फिरोजाबाद तथा बेवर में झांकी तथा चलचित्र प्रदर्शनी द्वारा हजारों आत्माओं को शिव बाबा का परिचय दिया गया।

गांधी नगर (गुजरात) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि शहर में त्रिदिवसीय प्रदर्शनी तथा पांच चैतन्य देवियों की झांकी का आयोजन किया गया जिनसे 300 आत्माओं को लाभ मिला। राधेजा गांव के मेले में भी देवियों की झांकी सजाई गई।

नागपुर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि हिंगुलंबीका देवी के मंदिर में सात दिवसीय प्रदर्शनी एवं शिवशक्ति-दर्शन झांकी का आयोजन किया गया। एक और जगह नवरात्रि में दुर्गा मेले में प्रदर्शनी का स्टाल लगाया गया। जिससे हजारों आमात्ओं को शिवपिता का संदेश मिला।

संकेश्वर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि निप्पानी अक्कमहादेवी मंदिर में लायन्स क्लब की ओर से एक सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बम्बई से आए हुए गिरीश पटेल जी ने "मेडिटेशन एज मैडिशियन" विषय पर प्रवचन किया।

बटाला सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि नवरात्रि के दिनों में शहर के प्रसिद्ध मंदिर काली द्वारे के समीप चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, साथ में चेतन देवियों की झांकी सजाई गई। इसके अतिरिक्त यहां पर आल 'डिया मैडिकल एशोसिएशन की तरफ से डाक्टर वर्ग की मीट रखी गई जिसमें बम्बई से आए हुए गिरीश भाई जी ने बहुत प्रभावशाली प्रवचन किया। स्लाइड शो भी दिखाया गया।

महबूब नगर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि शादनगर नामक स्थान में राजयोग प्रदर्शनी तथा शिविर का आयोजन किया जिसका उद्घाटन वहां के प्रसिद्ध डाक्टर तथा अनेक संघ संस्थानों के प्रमुख डाक्टर रामाचारी जी ने किया और कहा कि यहां पर दिया जाने वाला ज्ञान—ओल्ड मैडिशियन इन न्यू बोटल—जैसा है।

यादगीर (गुलबर्गा) स्थानीय उपसेवा केन्द्र की ओर से वहां के न्यायवादियों के लिए एक खास कार्यक्रम रखा गया जिसमें "ज्ञान तथा न्याय और न्याय में योग का स्थान" विषय पर प्रकाश डाला गया।

लातूर (महाराष्ट्र) सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां के जिलाधीश भ्राता हुसैनी तथा उप जिलाधीश भ्राता पवार ने स्थानीय सेवाकेन्द्र का अवलोकन किया।

ज्ञानयोग की जानकारी लेने के बाद भ्राता हुसैनी जी ने कहा कि "मैं आपका बड़ा शुक्रगुजार हूं कि आपने मुझे यहां बुलाकर एक नेक रास्ता बताया।"

देगलर सेवा केन्द्र की ओर से नायगांव में जूनियर कालेज में, तालुके की टीचर्स मीटिंग में, विट्ठल मंदिर में तथा व्यापारी वर्ग के समक्ष प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कटक सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि दर्पणी रानी के महल में त्रिदिवसीय "विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी" लगाई गई जिसे देखकर हजारों भक्त आत्माओं ने लाभ लिया। बणीया सांही तथा पीठापुर में प्रोजैक्टर शो किया गया। कटक रेडियो से दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य प्रसारित किया गया।

सांपला सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां आत्माओं को अज्ञान निद्रा से जगाने के लिए चार दिन की "आत्म—उत्थान चरित्र निर्माण अध्यात्मिक प्रदर्शनी" लगाई गई। दशहरे के अवसर पर भी शहर की आत्माओं को दशहरे का आध्यात्मिक रहस्य समझाया गया कि रावण को जलाने से क्या अभिप्राय: है।

बड़ौदा सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि नवरात्रि-दशहरा के उत्सव पर कारेली बाग में बहुचराजी माता के मंदिर में 10 दिन के लिए विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी रखी गई, जिससे लगभग 5000 आत्माओं को दिव्य संदेश प्राप्त हुआ।

बार्शी सेवा केन्द्र से समाचार हुआ है बार्शी के एक मित्र मैनेजर के निमंत्रण पर 2 दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें उद्योग में आध्यात्मिकता" विषय पर प्रवचन किया गया। "इस प्रदर्शनी मिल के लगभग 300 मजदूरों एवं आफीसरों ने लाभ प्राप्त किया। आफीसरों का योगशिविर वहां के पांच-स्टार गेस्ट हाउस में आयोजित किया गया।

वेरावल सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि कस्तूरबा महिला मंडल में तीन देवियों की भव्य चैतन्य झांकी सजाई गई तथा रामेश्वर मंदिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया।

जम्बुसर सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि जंत्राण हाईस्कूल में 'बाल चरित्र निर्माण' के विषय पर प्रवचन किया गया। एक अन्य स्थान पर प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचन किया गया। इसके अतिरिक्त मोभा पाकण विद्या मंदिर हाईस्कूल में, कावी गांव में तथा शिकोतर माता जी के मंदिर में चैतन्य देवियों की झांकियाँ सजाई गई।

महू सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां की स्थानीय चौरासिया धर्मशाला में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा ज्ञान शिविर का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन एस. डी. ओ. भ्राता अमरसिंह ने किया। प्रदर्शनी देखकर वे बहुत प्रभावित हुए।

अंजार सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि विश्व में "एकता का आधार" विषय पर निबंध-स्पर्धा का आयोजन किया गया जिसमें 200 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भाग लिया। इसका समाचार 5 बार दैनिक पेपर "कच्छ मित्र" में छपा। 24 विद्यार्थियों ने ईनाम प्राप्त किए।

मुद्देबिहाल सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां पर "मानव दिव्यीकरण और युवाभिवृद्धि आध्यात्मिक मेले" का आयोजन किया गया।

राउरकेला सेवा केन्द्र की ओर से कालता और कूचड़ा में चार दिन की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे छोटे 2 गांवों में बाबा का संदेश दिया गया। प्रोजैक्टर शो भी किया गया।

डिब्रुगढ़ सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई तथा तीन देवियों की चैतन्य झांकी व राजयोग विश्व-शांति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। तीन दिन में लगभग तीन लाख आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया। तिनसुकिया, शिवसागर तथा डिगबोई में भी "आध्यात्मिक प्रदर्शनी" लगाई गई।

मिर्जापुर सेवाकेन्द्र की ओर से विन्ध्यावासनीदेवी के धाम के समीप एक सप्ताह के लिए राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। विन्ध्याचल नौरात्रि मेले में आए हुए हजारों भक्तों ने प्रदर्शनी को देखा।

नयागंज (कानपुर) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि गोला गोकर्णनाथ गीता पाठशाला के सहयोग से हिन्दुस्तान शुगर मिल में तथा मोहम्मदी जिला लखमीपुर खीरी में आध्यात्मिक प्रदर्शनियां लगाई गई।

आगरा सेवा केन्द्र की ओर से दशहरा के अवसर पर वहां के प्रसिद्ध स्थान बलेश्वर के रामलीला मैदान में आध्यात्मिक चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई। मातृ शिशु एवं परिवार कल्याण प्रशिक्षण केन्द्र की नर्सों एवं टीचर्स स्टाफ को उनके प्रशिक्षण केन्द्र पर एलबम एवं चार्टों द्वारा ज्ञान-योग का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त सत साई बाबा के कैलाशपुरी स्थित मंदिर के उनके वार्षिक कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी बहनों को निमन्त्रण मिला

जिसके द्वारा उनको भी परमपिता परमात्मा का परिचय दिया गया।

शिवसागर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि नागरी बिल्डिंग में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया साथ-साथ सम्पूर्ण पवित्र दुनिया स्वर्ग की झांकी भी दिखाई गई जिससे लगभग 30,000 आत्माओं ने लाभ उठाया।

मजलिस पार्क (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से भैया-दूज के अवसर पर विशिष्ट व्यक्तियों का स्नेह मिलन आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि महानगर पार्षद भ्राता महेन्द्रसिंह एवं ट्रांसपोर्ट विभाग के संयुक्त-निर्देशक भ्राता मंगतराम सिंगल थे। भ्राता मंगतराम जी ने शान्ति का अनुभव करते हुए कहा कि मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे मैं मजलिस पार्क में नहीं हूँ। दिवाली मेले में एक स्टाल में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

पूना सेवाकेन्द्र की ओर से मेडिकल ग्राउंड में लगे दिवाली मेले में दो स्टाल लेकर एक सप्ताह के लिए "राजयोग प्रदर्शनी" लगाई, जिसका उद्घाटन पूना के डिप्टी मेयर महोदय ने किया। इस प्रदर्शनी से हजारों आत्माओं को शिव बाबा का दिव्य संदेश मिला।

चण्डीगढ़ सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि वहां पर ब्र० कु० हृदय मोहनी जी के कर-कमलों द्वारा राजयोग केन्द्र का शिलान्यास किया गया। इसी अवसर पर एक सर्व धर्म सभा का भी आयोजन किया गया तथा तीन दिन के लिए "चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी" एवं राजयोग शिविर का भी विशाल रूप से आयोजन किया गया।

भावनगर सेवा केन्द्र की ओर से डाक्टर वर्ग का स्नेह मिलन आयोजित किया गया। गांधी जयन्ती के उपलक्ष्य में "अस्पृश्यता निवारण समिति" द्वारा आयोजित सार्वजनिक सभा में ब्र० कु० बहिनों ने बताया कि सच्ची अस्पृश्यता मानवों से नहीं लेकिन विकारों से होनी चाहिए। नवरात्रि के अवसर पर शहर के टाउन हाल में चैतन्य देवियों की झाँकी एवं आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। भ्राता पंचमसिंह के वहां पहुंचने पर कई जगह प्रवचन के कार्यक्रम रखे गए, प्रैस कांफ्रैंस भी बुलाई।

भंडारा सेवाकेन्द्र की ओर से दो ट्रक सजाकर शोभा यात्रा निकाली गई। लाखनी गांव की गीता पाठशाला द्वारा तीन स्थानों पर प्रवचन एव प्रोजैक्टर शो के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कृष्णानगर (दिल्ली) सेवाकेन्द्र की ओर से एक मिडल स्कूल में बल चित्र निर्माण प्रदर्शनी तथा हायर सैकेन्ड्री स्कूल में "युवा प्रदर्शनी" दिखाई गई, जिनको देखकर दोनों स्कूलों के हजारों विद्यार्थियों एवं अध्यापक गण ने लाभ उठाया।

भुवनेश्वर सेवाकेन्द्र की ओर से दशयला का सुबल्या में त्रिदिवसीय विश्व-नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। राज्य आबकारी विभाग के मंत्री भ्राता हबीबुला खां एवं अन्य विशिष्ट व्यक्ति भी सेवाकेन्द्र पर आए तथा शांति एवं पवित्रता का अनुभव करके बहुत प्रभावित हुए।

सतना सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि प्रौढ़ शिक्षा प्रशिक्षण के अवसर पर राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। चित्रकूट धाम में आयोजित रामायण मेले में रामायण के आध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डाला गया। व्यापारिक क्षेत्र कैम्प में चार दिवसिय आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया।

मुजफ्फर नगर सेवाकेन्द्र की ओर से दशहरे के अवसर पर रामलीला टीला पर शिवदर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। गांधी कालोनी में श्री लक्ष्मी श्री नारायण की झांकी एवं शिवदर्शन प्रदर्शनी लगाई गई।

साउथ एक्सटेंशन (दिल्ली) सेवाकेन्द्र की ओर से रामाकृष्णापुरम में स्वामी मलाई मंदिर के समीप एक विशाल मैदान में 12 दिन के लिए विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया, जिनका उद्घाटन गुयाना के राजदूत भ्राता स्टीव नारायण जी ने दीप जलाकर किया। भ्राता निर्वैर जी भी विदेश सेवा पूरी करके उपस्थित थे। मुख्य मुख्य स्थानों से शांति यात्रा भी निकाली गई। प्रतिदिन नवदुर्गा झांकी तथा ध्वनि एवं प्रकाश का कार्यक्रम भी दिखाया जाता था। योगशिविर से लगभग 400 आत्माओं ने लाभ लिया।

मालेगांव से समाचार प्राप्त हुआ है कि चौपड़ा एवं नरडाने में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। इसके अतिरिक्त सटाणा, बाडेगांव, आमडेद गांव, कमखेड़ा, भडगांव, अमलनेर तथा वर्षी गांव में आध्यात्मिक प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन प्रवचनों के द्वारा अधिकतर स्कूलों के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया

घाटकोपर (बम्बई) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि नवरात्रि के अवसर पर "राजावाडी नवरात्रि मित्र मंडल" के निमंत्रण पर तीन स्टाल लेकर चैतन्य देवियों की एवं स्वर्ग की झांकी सजाई गई। झांकियां इतनी आकर्षक

थी कि देखने वालों की प्रात: 9 बजे से रात्रि 1.30 बजे तक भीड़ लगी रहती थी। कल्याण, बम्बई आदि दूर 2 के स्थानों से भी लोग झांकी देखने आए। अनेक वी. आई. पीज ने तथा साधारण जनता ने झांकी को देखकर शिव बाबा का संदेश प्राप्त किया।

कुरुक्षेत्र में डॉ० हरीश जी के आगमन पर पंचायत भवन, कृष्णधाम, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय एवं गीता हायर सैकण्ड्री स्कूल में भिन्न-2 कार्यक्रम रखे गए जिससे सारे कुरुक्षेत्र में आध्यात्मिकता की लहर फैल गई।

करनाल: 26 नवम्बर को चरित्र निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन दादी चन्द्रमणि द्वारा सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह में उपायुक्त डॉ० एच० एस० आनन्द ने अपने भाषण में कहा कि संग्रहालय के अन्दर ज्ञान योग और धारणा पर बड़े अच्छे ढंग से बताया गया है। और यह नवयुवकों, बूढ़ों तथा सर्व के लिये चरित्र निर्माण के लिये सेवा करेगा। □

गीत

—ब्र०कु० मोहन, अमृतसर

शिव शक्तियां चल पड़ीं, घर घर को स्वर्ग बनाने
लेके मुख में शिव की वाणी, जन जन को सुनाने

शिव ने ब्रह्मा द्वारा एक महायज्ञ रचाया
इन कुमारियों ने अपना जीवन इसमें लगाया
किया है तन मन को समर्पण, हर मन को हर्षाने
लेके मुख में शिव की वाणी·····

ज्ञान अमृत कलश शिव ने इनके सर टिकाया
ब्रह्मा ने अपने गुणों से, इनको है सजाया
जगदम्बा ने जगाया इनको, चली है सबको जगाने
लेके मुख में शिव की वाणी·····

मन पवित्र, उजवल वस्त्र, शुभ है इनकी आशा
हर आत्मा को ज्ञान देकर, शिव से जुटाये नाता
सुखों की जननी यही है, चली है यह सुख लुटाने
लेके मुख में शिव की वाणी·····

सोच लिया है अब इस मन में दैवी दुनियां बनानी
जग को हम करेगी पावन, देके हर कुर्बानी
दिया है जो शिव ने नारा, सबको चली सुनाने
लेके मुख में शिव की वाणी·····

जगदीश चन्द हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70